साप्ताहिक

पृथ्वी पर हम सब समय माया के यात्री हैं

# समय माया

R.N.I. No.: MP/HIN/2006/20685

प्रधान संपादक- अजमेरा एस.पी. कुमार
B.COM., M.A., LLB, CAIIB, DLLLW&PM

Webite: www.samaymaya.com
Email: samaymaya@gmail.com
samaymaya@rediff.com

Cell: +91 9425125569
+91 9479535569

(C) All Copyrights reserved with chief editor, do not publish any matter without prior written permission

In case of any dispute, may be solved only in Indore Court Jurisdiction

वर्ष 17 अंक 12 प्रति सोमवार इंदौर, 23 से 29 अक्टूबर 2023 पृष्ठ 8 मूल्य 2/- रुपए

# भारत-अमेरिकी यूरोपीय ड्रग ट्रायल के षडयंत्र का अड्डा

## 70% अकाल मौत के लिए विश्व घातक संगठन जिम्मेदार भारत में इंडियन काउंसिल आफ मेडिकल रिसर्च और इंडियन मेडिकल एसोसिएशन सभी WHO के एजेंट

बिल गेट ईसाई मिशनरी व बहुराष्ट्रीय कंपनियों का पूर्व नियोजित दुनिया की जनसंख्या को कम करने का कोरोना अंतरराष्ट्रीय षड्यंत्र था। यह बात दुनिया की सभी सरकारी व उनके स्वास्थ्य मंत्रालय जानते थे परंतु सभी को बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने देश और दुनिया के व्यापार पर कब्जा करने के लिए मोटा पैसा बांटा था। इसकी तैयारी में अकेले वॉलमार्ट अमेरिका ने जिसे लगभग 150 से ज्यादा देशों में व्यापार फैला हुआ है और लाखों करोड़पति मां की कमाई पिछले कई सालों से वहां की सरकारों को खरीद और कानून बनवाकर छोटे व्यवसाईयों उद्योगों व्यापारों बाजरो मंडियों को खत्म कर अपने शॉपिंग मॉल के माध्यम से कर रहा है।

इसकी तैयारी में सन 2004-5 में भारत में भी उसने लगभग साढे 37000 करोड डॉलर खर्च कर भारत में खाद्य सुरक्षा में मानक अधिनियम बनवाया था इसका उद्देश्य था सारे छोटे व्यवसाईयों मंडियों बाजारों को खत्म कर किसानों की कृषि भूमि पर कब्जा कर सारे खाद्य व्यवसाय को हथिया कर सारे खाद्य पदार्थों की पैकिंग कर उसको10 से 100 गुना कीमत पर बैचकर जनता को लूटना

दूसरी तरफ प्रधानमंत्री मुख्यमंत्रियों भारत सरकार और प्रदेश सरकारों के सारे स्वास्थ्य विभाग के अंतर्गत काम करने वाले खाद्य सुरक्षा एवं औषधि विभाग को क्षेत्रीय नगर निगम पालिकाओं थानों को खरीद कर मासिक वेतन के बराबर वेतन बांट कर सारी दुकानों फुटपाथ ठेलों आदि को कानून के दम पर खत्म कर अपनी लूट का तांडव करवाना था। जिसका सच अपने कोरोना कल में न केवल भारत में बल्कि दुनिया के हर देश में देखा। दूसरी तरफ वन वर्ल्ड ऑर्डर के अंतर्गत बिल गेट व ईसाई मिशनरी का जो विश्व की जनसंख्या को कम करने का जो षड्यंत्र था। उसके अंतर्गत जानबूझकर 24 घंटे टीवी मोबाइल समाचार पत्रों में भय फैला कर पूरी विश्व की जनता को सर्दी खांसी जुकाम की आड़ में अस्पतालों में भर्ती कर मार डालेंगे जिसमें हर मौत के पीछे 280000 रुपए का भुगतान किया जा रहा था मानसिक भय के चलते जिस कृत्रिम भयावह वातावरण में जनता को मुंह पर जबरदस्ती मास्क बांधकर दम घोंट, हाथों को बार-बार अल्कोहल जैसे घातक रासायनिक तत्वों से धुलवा धुलवा कर जानबूझकर मानसिक और शारीरिक रूप से उसकी रोग प्रतिरोधी क्षमता घटाकर बीमार बनाकर अस्पतालों की तरफ भगदड़ मचवाई जा रही थी। सरकारी संस्थाएं बहुराष्ट्रीय कंपनियों की और विश्व घातक संगठन की गुलाम होकर पूरे देश और दुनिया को बंद कर जो तांडव कर रही थी वह सब कुछ स्वयं बयां कर रहा था।

इशारा सुनियोजित एक तरफ बीमार बना कर तो दूसरी तरफ बाजारों को बंद कर भूख से करने का शरण किया जा रहा था दिखावे के लिए नेता और सरकारी अधिकारी जो उनके भोजन पानी की व्यवस्था के लिए सामग्री आ रही थी वह केवल 5 से 10% पटवारी जाकर बाकी सब हजम करके बेची जा रही थी?। इस प्रकार पहले 2020 की मार्च सेजून जुलाई तक की लहर में लगभग एक से डेढ़ करोड़ लोगों को अकाल मौत का शिकार बनाया गया और दूसरी लहर मेंसन 2021 में लगभग 3:30 से 4 करोड लोगों को मौत का शिकार बनाया गया इसकी आड़ में जो टीका ठोकने का षड़यंत्र किया गया। जो साधारण किसी बीमारी का टीका बनाने में 20 से 25 साल लगते हैं वह टीका मौत के भयावह तांडव के लिए सन 2016 से बनाया जाने लगा था।

उसे ठीक कैसे स्वयं अक्टूबर2020 से 2000 नवंबर 21 तक लगभग 80000 से ज्यादा डॉक्टर और दो लाख से ज्यादा स्वास्थ्य कर्मियों की अकाल मौत हुई परजिन डॉक्टरों को मोटा कमीशन मिल रहा था। वह सब टीके की मौत का तांडव देखकर भी चुपचाप बैठे हुए थे और टीका ठोकने में लगे हुए थे। टीके के षड्यंत्र के खिलाफ पूरी दुनिया में न केवल मैं बल्कि लगातार हर कोने से आवाज उठने लगी स्वास्थ्य मंत्रालय देश की सरकारी बदनाम होने लगी।

(शेष पेज 6 पर)

# बच्चों की बर्बादी के लिए WHO जिम्मेदार

## अमेरिकी गूगल माइक्रोसॉफ्ट भविष्य की पीढ़ी कर रहे बर्बाद

**कोरोना के साइलेंसर में ऑनलाइन पढ़ाई के बहाने गेमिंग यौन शोषण अपराधों में उलझा कर चौपट किया जा रहा दुनिया का भविष्य**

पूरी दुनिया को गुलाम बनाने लूट कर बर्बाद करने में अमेरिकी जालसाज डकैत कंपनियां पिछले शताब्दी से अनेकों षड्यंत्र करती चली आ रही है। जिसका इतिहास बहुत लंबा और घिनौना है। पर वर्तमान में इंटरनेट यथार्थ में सूचना तंत्र का मकड़ जाल लोगों को मानसिक शारीरिक आर्थिक और सामाजिक रूप से पूर्ण गुलाम बन चुका है। इससे सबसे ज्यादा हमारी युवा होती पीढ़ी शारीरिक और मानसिक रूप से कमजोर हो स्वतंत्र सोचने की क्षमता, आलसी हो शारीरिक रूप से भी पन्गु हो नपुंसक होती जा रही है। स्वाभाविक है उसके बदले में अमेरिकी दवा उत्पादक कंपनियों की ही दवाई में की जाएगी और उससे वह मोटी कमाई करेगा।

(शेष पेज 7 पर)

## बैंकों में जमा धन मोदी बाप की जागीर नहीं

# मित्रों का कर्ज माफ जनता की जेब साफ

**राक्षस घोर लालची मोदी ने बहुराष्ट्रीय कंपनी वह अपनी पूंजीपति मित्रों के फायदे और उन के इसारे पर नाच कर 9:30 साल में आते ही सफाई वेे नाम छोटे व्यवसाईयों दुकानदारों फुटपाथ वालों को साफ कर, कैशलेस करोड़ों लोगों के खाता खुलवाकर अपने मित्रों की पेटीएम भी व अन्य ऑनलाइन अप वेे माध्यम से जनता के धन को बटोरा।**

इसके बाद नोटबंदी मैं भी लगभग 50 करोड़ बैंक खाते खुलवाकर न्यूनतम शेष व अन्य शुल्कों इसमें रखरखाव पन्ने के शुल्क के नाम से जनता का लगभग 12 से 15 लाख करोड़ माध्यम से सरकारी सहकारी व निजी बैंकों द्वारा अपना लाभ मान, हजम कर जालसाज मोदी के मित्रों अडानी अंबानी टाटा बिरला रामदेव नीरव मोदी बल लगभग 10000 से ज्यादा गुजरातियों का जो गुजरात की सरकारी सहकारी निजी बैंकों ने जो लाखों करोड़ का कर्ज दिया था। बदले में 25% तक कमीशन वसूल कर का लिया माफ करवा गया। जीएसटी में छोटे-छोटे व्यवसाईयों उद्योगी दुकानदारों के भी बैंक खाता खुलवाकर उनको भी बैंकों ने विभिन्न शुल्कों के नाम जमकर लूटना शुरू कर दिया जो पहले निशुल्क हुआ करते थे यहां तक की नगद जमा करने निकलने, बही के पन्ने, एटीएम से कैश निकालने पर 175 रुपए के साथ उसमें 18% जीएसटी जोड़ दिया गया। (शेष पेज 6 पर)

साप्ताहिक समय माया

## संपादकीय

# कोप-कलह-कोहराम

राजनीति में पार्टियों के अंदर कलह और कोहराम कहाँ नहीं है! महत्वकांक्षाएँ अहमन्यता पैदा करती है। हर नेता अपनी सुरक्षा के लिए अपने लोगों को बढ़ाता है। सत्ता पर वर्चस्व के लिए ज़ोर आज़माइश होती है। अहम टकराते हैं। तू-तू-मैं-मैं मचती है और हर तरह की व्यूह रचना प्रतिस्पर्धी नेता के खिलाफ रची जाती है। अपने देश में चुनाव के वक़्त यह राजनीति खुलकर खेलती है। और कोई मौसम भले कमज़ोर रहे चुनावी मौसम कभी कमज़ोर नहीं पड़ता। दुर्भाग्य से यह चुनावी मौसम लगातार इस क़दर बना रहता है कि राजनीति को बदलाव जन कल्याण के अपने बुनियादी काम करने का अवकाश ही नहीं मिलता । इसलिए राजनीति आरोप-प्रत्योरोप, असंतोष और कलह का नाम होकर रह गयी है। हर पार्टी का यही हाल है। काँग्रेस, भाजपा में यह चरम पर है। शायद सही यह कहना होगा कि भाजपा अब काँग्रेस के ही नक्शेक़दम पर चल रही है। काँग्रेस के बारे में तो यही कहा जाता रहा है कि उसका विपक्ष हमेशा उसके अंदर मौजूद रहता है। पंजाब में काँग्रेस को कलह ले डूबी और सिद्धारमैया-डी. शिवकुमार की एकजुटता ने कर्नाटक में उसे चुनावी वैतरणी पार करा दी। ज्योतिरादित्य सिंधिया का कलही घड़ा जब भर गया तो उन्होंने मध्यप्रदेश में काँग्रेस का सत्ता का महल ढहा दिया। पाँच राज्यों में अगले महीने चुनाव हैं। टिकट बँट रही है और असंतोष, रोष बढ़ता जा रहा है। कलह तेज़ है। पार्टी के कोप भवन गुलज़ार हैं। कोहराम मचा हुआ है। पाँच राज्यों के ये चुनाव कई तरह से एक बार फिर हमारी राजनीति की कलई खोलते हैं। दलों के आंतरिक लोकतंत्र, अनुशासन, नियम-क़ानूनों, मान-मर्यादा का असली रूप सामने लाते हैं। गुटबाज़ी, गिरोहबंदी, भाई-भतीजावाद, चापलूसी, चुगलखोरी ऊपर से नीचे तक व्याप्त दिखती है। यह सब हमेशा से चल रहा है। पर आज भी यही चल रहा है यह हैरतकारी है। हमारी राजनीति ने कुछ सीखा नहीं। वह दिनोंदिन नये स्वांग भरने वाली लीलामय होता जा रही है। आज जब मीडिया विस्फोट के ज़माने में कुछ भी गोपनीय नहीं रह गया है तब राजनीति का जन-प्रयोजनों से विरहित होकर कलह-केंद्रित होना दुखद है। साल भर राजनीति के कुचक्रों को हम निष्क्रियता से देखते हैं। सत्ताकामी राजनीति के नये-नये आयाम मणिपुर, गुजराज से महाराष्ट्र तक नुमाया होते रहते हैं, लेकिन चुनाव के समय राजनीतिक दुरभिसंधियाँ अतिविकट रूप में दिखती हैं। काँग्रेस ने छत्तीसगढ़ में किसी तरह असंतोष को वहाँ सत्ता में ज्यादा भागीदारी देकर ख़ामोश कर दिया है। पर मध्यप्रदेश और राजस्थान की दोनों मुख्य पार्टियों, काँग्रेस और भाजपा का हाल ये चुनाव बताते हैं। दोनों का मामला अंदरूनी तनावों से इतना गरमाया हुआ है कि जहाँ राजस्थान में भाजपा जीतती दिख रही था वहाँ काँग्रेस के भी जीत के आसार दिखने लगे हैं और मध्यप्रदेश में काँग्रेस की शर्तिया जीत भाजपा को चुनौती में चुनौती में खड़ा कर रही है। भाजपा को राजस्थान में वसुंधरा परेशान किये हुए है। पार्टी का शीर्ष नेतृत्व क्षेत्रीय नेतृत्व को मिटाने में लगा है। शिवराज और वसुंधरा दोनों खिन्न हैं। वहीं काँग्रेस क्षेत्रीय नेतृत्व को पुष्ट कर रही है। भाजपा मुख्यमंत्री का चेहरा छिपा कर चल रही है जबकि भारतीय दलीय राजनीति में क्षत्रप भी अंतिम समय तक अपना दावा नहीं छोड़ते। वसुंधरा हों या शिवराज या गहलोत सभी सर्वोच्च पद पर अपना दैवीय हक़ मानते हैं। काँग्रेस राजस्थान में सचिन को साध पायी है पर भाजपा मुश्किल में है। भाजपा मोदी-शाह किसी से न सलाह लेते हैं न किसी की सुनते हैं। सांसदों को मालूम तक नहीं था कि उनसे चुनाव लड़ने को कहा जाएगा। मध्यप्रदेश के नरेंद्र तोमर पार्टी की प्रत्याशी चयन स्क्रीनिंग कमेटी में थे फिर भी वे कतई अनभिज्ञ थे कि उन्हें भी चुनाव लड़ना पड़ेगा। इसलिए असंतोष चरम पर है और भाजपा में सुनवाई का ठिकाना है ही नहीं। काँग्रेस के शीर्ष नेता कमलनाथ और दिग्विजय टिकट बँटवारे पर खुलेआम मंच पर एक-दूसरे पर आरोप मढ़ रहे हैं। दरअसल दोनों के ऊपरी प्रेम के अंदर पुत्र-प्रेम को लेकर आपसी द्वेष का यह सतह पर आना था। दोनों अपनी विरासत सत्ता और इनसे जुड़ी तमन्नाएँ बेटों को सौंप देना चाहते हैं।

## जनता को निकम्मा बना रही मुफ्तखोरी की लत

# रेवड़ी की राजनीति

### कर्ज ले घी पीने पिलाने का षडयंत्र अर्थव्यवस्था को करेगा चौपट

**मुफ्तखोरी की संस्कृति इतने खतरनाक स्तर पर पहुंच गई है कि कुछ राजनीतिक दलों का अधिकांश चुनावी एजेंडा, एक सोची-समझी रणनीति के तहत केवल मुफ्त की पेशकशों पर आधारित है, जो मतदाताओं को स्पष्ट रूप से एक संदेश भेज रहा है कि यदि राजनीतिक दल जीतता है तो उन्हें ढेर सारी मुफ्त चीजें मिलेंगी। इससे कई सवाल खड़े होते हैं, जिनमें यह भी शामिल है कि क्या मतदाताओं के दिमाग में हेरफेर करने और सत्ता में आने के लिए मुफ्त उपहार देने की ऐसी रणनीति लोकतंत्र में नैतिक, कानूनी और स्वीकार्य है? सब्सिडी और मुफ्त चीजें राजकोषीय घाटा बढ़ाती हैं और सरकारी राजस्व पर दबाव डालती हैं, जिससे घाटा और भी बढ़ जाता है। मुफ्तखोरी मतदाताओं की निर्णय लेने की शक्ति को बुरी तरह प्रभावित करती है। ऋण माफी को मुफ्त उपहार के रूप में देने से अनपेक्षित परिणाम हो सकते हैं, जैसे कि संपूर्ण ऋण संस्कृति को बर्बाद करना और मूल प्रश्न को अस्पष्ट करना कि कृषक समुदाय का एक बड़ा हिस्सा लगातार ऋण जाल में क्यों फंसता जा रहा है। श्रीलंका में आर्थिक उथल-पुथल मुफ्तखोरी की राजनीति के दुष्परिणामों का एक उदाहरण है। इसमें मजबूत वित्तीय स्वास्थ्य में बाधा डालने की क्षमता है। यह राज्यों को कल्याणकारी योजनाओं से संसाधनों को राजनीति से प्रेरित एजेंडे की ओर मोड़ने के लिए मजबूर करता है। अतार्किक मुफ्तखोरी स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव के खिलाफ है और लोकतंत्र में बाधा उत्पन्न करेगी। मुफ्तखोरी की संस्कृति स्वतः ही प्राकृतिक संसाधनों के प्रति गैर-जिम्मेदारी और संसाधनों के अति प्रयोग को बढ़ावा देगी और इससे पर्यावरण को अधिक नुकसान होगा। जैसे मुफ्त बिजली, मुफ्त पानी आदि। एक परिपक्व लोकतंत्र में, एक राजनीतिक दल केवल अच्छे और भ्रष्टाचार मुक्त शासन का ऋणी होता है, जबकि अच्छा शासन देना कठिन होता है, मुफ्त के वादों को पूरा करना सरल होता है। भारतीय मतदाता तर्कसंगत आर्थिक प्रबंधन के बजाय मुफ्तखोरी की राजनीति की ओर आकर्षित हैं, जो पंजाब, राजस्थान, छत्तीसगढ़, झारखंड और दिल्ली में बार-बार साबित हुआ है। रू0 55,000 करोड़ की मुफ्त चीज़ें पंजाब को दिवालियापन की ओर ले जा रही हैं, जो पहले से ही सबसे अधिक कर्ज़दार राज्य है, और कर्नाटक में रू. 62,000 करोड़ (जीएसडीपी का 3 प्रतिशत) की चुनावी गारंटी को भी इसी तरह की स्थिति मिलेगी।**

राजनीतिक दलों द्वारा मुफ्त बिजली, मुफ्त सार्वजनिक परिवहन, मुफ्त पानी और लंबित बिलों और ऋणों की माफी जैसे वादों की एक श्रृंखला को अक्सर मुफ्त उपहार माना जाता है। 'मुफ़्त उपहार' का वितरण भारत में चुनाव प्रचार का एक अभिन्न अंग बन गया है। मुफ्तखोरी की संस्कृति इतने खतरनाक स्तर पर पहुंच गई है कि कुछ राजनीतिक दलों का अधिकांश चुनावी एजेंडा, एक सोची-समझी रणनीति के तहत, केवल मुफ्त की पेशकशों पर आधारित है, जो मतदाताओं को स्पष्ट रूप से एक संदेश भेज रहा है कि यदि राजनीतिक दल जीतता है तो उन्हें ढेर सारी मुफ्त चीजें मिलेंगी। यह चुनाव अभियानों से अप्रभेद्य है जहां राजनेता दीर्घकालिक विकास लक्ष्य रोजगार गारंटी, शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं के लिए राज्य समर्थन, और अन्य कल्याणकारी योजनाएं निर्धारित करने के बजाय मतदाताओं को लुभाने के शॉर्टकट के रूप में मुफ्त पानी, बिजली, राशन, भोजन, टीवी, लैपटॉप, टैबलेट, साइकिल, स्कूटर, गैस सिलेंडर और सार्वजनिक परिवहन के वादे करते हैं। इससे कई सवाल खड़े होते हैं, जिनमें यह भी शामिल है कि क्या मतदाताओं के दिमाग में हेरफेर करने और सत्ता में आने के लिए मुफ्त उपहार देने की ऐसी रणनीति लोकतंत्र में नैतिक, कानूनी और स्वीकार्य है? सब्सिडी और मुफ़्त चीज़ें राजकोषीय घाटा बढ़ाती हैं और सरकारी राजस्व पर दबाव डालती हैं, जिससे घाटा और भी बढ़ जाता है।

मुफ्तखोरी मतदाताओं की निर्णय लेने की शक्ति को बुरी तरह प्रभावित करती है। ऋण माफी को मुफ़्त उपहार के रूप में देने से अनपेक्षित परिणाम हो सकते हैं, जैसे कि संपूर्ण ऋण संस्कृति को बर्बाद करना और मूल प्रश्न को अस्पष्ट करना कि कृषक समुदाय का एक बड़ा हिस्सा लगातार ऋण जाल में क्यों फंसता जा रहा है। श्रीलंका में आर्थिक उथल-पुथल मुफ्तखोरी की राजनीति के दुष्परिणामों का एक उदाहरण है। इसमें मजबूत वित्तीय स्वास्थ्य में बाधा डालने की क्षमता है। यह राज्यों को कल्याणकारी योजनाओं से संसाधनों को राजनीति से प्रेरित एजेंडे की ओर मोड़ने के लिए मजबूर करता है। अतार्किक मुफ्तखोरी स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव के खिलाफ है और लोकतंत्र में बाधा उत्पन्न करेगी। मुफ्तखोरी की संस्कृति स्वतः ही प्राकृतिक संसाधनों के प्रति गैर-जिम्मेदारी और संसाधनों के अति प्रयोग को बढ़ावा देगी और इससे पर्यावरण को अधिक नुकसान होगा। जैसे मुफ्त बिजली, मुफ्त पानी आदि। एक परिपक्व लोकतंत्र में, एक राजनीतिक दल केवल अच्छे और भ्रष्टाचार मुक्त शासन का ऋणी होता है, जबकि अच्छा शासन देना कठिन होता है, मुफ्त के वादों को पूरा करना सरल होता है। भारतीय मतदाता तर्कसंगत आर्थिक प्रबंधन के बजाय मुफ्तखोरी की राजनीति की ओर आकर्षित हैं, जो पंजाब, राजस्थान, छत्तीसगढ़, झारखंड और दिल्ली में बार-बार साबित हुआ है। रू0 55,000 करोड़ की मुफ्त चीज़ें पंजाब को दिवालियापन की ओर ले जा रही हैं, जो पहले से ही सबसे अधिक कर्ज़दार राज्य है, और कर्नाटक में रू. 62,000 करोड़ (जीएसडीपी का 3 प्रतिशत) की चुनावी गारंटी को भी इसी तरह की स्थिति मिलेगी।

'मुफ़्त उपहार' पॉलिटिक्स पर वित्त आयोग (एफसी) की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। यह राज्यों को संघीय संसाधनों के हस्तांतरण के लिए एकमात्र संवैधानिक निकाय है। ऐसी मुफ़्तखोरी की राजनीति से निपटने के लिए उसके पास शायद ही अधिकार, वैधता या क्षमता है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि मुफ्त वस्तुओं का वितरण स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव के खिलाफ है और चुनावी प्रक्रिया का उल्लंघन करता है। सुप्रीम कोर्ट ने चुनाव आयोग (ईसी) को मुफ्त वस्तुओं के संदर्भ में उचित दिशानिर्देश तैयार करने का निर्देश दिया। हालाँकि, चुनाव आयोग ने केवल एक अस्पष्ट दिशानिर्देश प्रदान किया, जिसमें पार्टियों को वादा किए गए मुफ्त उपहारों के वित्तपोषण की योजनाओं को बताने की आवश्यकता थी। सुप्रीम कोर्ट ने इस मुद्दे पर विचार करने के लिए सभी हितधारकों को शामिल करते हुए एक विशेषज्ञ पैनल गठित करने का आह्वान किया, लेकिन अभी तक कुछ भी सामने नहीं आया है।

राजनीतिक दलों को मुफ्त उपहारों का वादा करने से रोकना मुश्किल होगा, लेकिन जन प्रतिनिधित्व अधिनियम (आरपीए) में संशोधन के माध्यम से सिद्धांतों का खुलासा करना अनिवार्य करके इसे कुछ हद तक हल किया जा सकता है। इसे राजनीतिक दलों के बीच सर्वसम्मति के माध्यम से केवल विधायिकाओं द्वारा ही प्रभावी ढंग से संबोधित किया जा सकता है।

भारत में मुफ्तखोरी की राजनीति की प्रवृत्ति राजकोषीय जिम्मेदारी और लोकतांत्रिक मूल्यों के बारे में चिंता पैदा करती है। इस चिंता को संबोधित करने के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण की आवश्यकता है। दुर्लभ निधि को मुफ़्त चीज़ों पर खर्च करने के बजाय रोज़गार सृजन में निवेश करना महत्वपूर्ण है। यह वह प्रश्न है जिसका उत्तर अंततः मतदाता ही दे सकते हैं। मुफ़्त चीज़ों के मुद्दे के समाधान के लिए लोकतांत्रिक जवाबदेही पर भरोसा करना महत्वपूर्ण है। राजनीतिक दलों को राजनीतिक वादे करने से पूरी तरह रोका नहीं जा सकता। हालाँकि, ऐसे वादे, भले ही उनमें कुछ मुफ्त चीज़ें शामिल हों, मुख्य रूप से तर्कसंगत और संवैधानिक कल्याण उद्देश्यों के अनुरूप होने चाहिए। इसके अलावा, राजनीतिक दलों को मुफ्त उपहारों के राजनीतिक वादों को पूरा करने के लिए धन के स्रोत की घोषणा करनी चाहिए।

राजनीतिक दलों को सूचित करना चाहिए कि क्या मुफ्त के लिए धन सरकारी खजाने से आएगा, और यदि ऐसा है तो यह केवल एक जेब से पैसा लेना और मतदाता की दूसरी जेब में डालना है, सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि बड़े पैमाने पर, अनियंत्रित मुफ्तखोरी संस्कृति हमारे जैसे लोकतंत्र में स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनावों की छत को हिला देती है। मुफ़्तखोरी की संस्कृति को नियंत्रित करने वाले नियम बनाने की तत्काल आवश्यकता है, इससे पहले कि यह और अधिक विस्फोट करे और अधिक खतरनाक आर्थिक और राजनीतिक उथल-पुथल का मार्ग प्रशस्त करे। अन्यथा, 'मुफ़्त उपहार' सबसे महंगा साबित हो सकता है!

# शिक्षण संस्थाएं लंपट लुटेरे माफियाओं के डकैती के अड्डे

## सारे शिक्षण संस्थान फर्जी अंकसूचियां और डिग्री बांटने की दुकानें

शिक्षण के क्षेत्र में निजी संस्थाओं, माफियाओं, पूंजीपतियों, नेताओं, अधिकारियों, कंपनियों के उतरने का मूल्य उद्देश्य ही था अपनी यौनाकांक्षाओं को पूरा करना, शिक्षा के नाम पर विद्यार्थियों के माता-पिता को लूटना और यथार्थ में मोटी कमाई के लिए साधन हीनता के साथ सक्षम शिक्षकों का न्यूनतम वेतन देकर शिक्षक करवा फर्जी डिग्रियां बांट युवा पीढ़ी का जीवन बर्बाद करना था।

और भाई चारों तरफ चल रहा है। हर शिक्षण संस्था चाहे वह छोटे बच्चों की नर्सरीहो हो प्राथमिक माध्यमिक उच्च माध्यमिक या महाविद्यालय विश्वविद्यालय शिक्षा हो, सभी शिक्षण संस्थानों में ना तो अच्छे शिक्षक होते हैं जिसमें यदि हम नर्सरी स्कूल की बात करें तो बाल्यावस्था के बच्चों को पढ़ाने के लिए बाल शिक्षा की स्नातक डिग्री होना चाहिए जिसमें बाल्यावस्था के बच्चों का मनोविज्ञान आदि पढ़ाई जाते हैं। की व्यवस्था की है पर अधिकांश बाल्य पाठशालाओं स्कूलों में ऐसे शिक्षकों कीजिनका मासिक वेतन कम से कम 25 से 40 हजार रुपए होना चाहिए की अपेक्षा 5 से8-10 हजार रुपए महीने के शिक्षकों को जो पांचवी आठवीं दसवीं पास होती हैं भर्ती कर ली जाती है फिर नर्सरी स्कूलों में पर्याप्त खिलौने भोजन बनी चिकित्सा खेल का मैदान पर्याप्त स्वच्छ हवादार कमरों की व्यवस्था होनी चाहिए जहां बच्चे खेल कूद पढ़ाई भोजन पानी आदि कर समय बातचीत कर सकें वैसे भारतीय कारखाना अधिनियम में ऐसे झूला गुरु की व्यवस्था हर शक्तियों में भी की जाने की व्यवस्था अनिवार्य रूप से किए जाने की व्यवस्था भी है जहां तक प्राथमिक माध्यमिक स्कूलों का सवाल है तो फीस हजारों में ली जाती है परंतु वही हाल यहां पर भी शिक्षण स्नातक शैक्षिक योग्यता वाले शिक्षक केवल सरकारी स्कूलों में मिलते हैं निजी स्कूलों में यहां पर भी दसवीं बारहवीं पास शिक्षक शिक्षिकाओं की भर्ती कर ली जाती है जिन्हें ना तो हिंदी या इंग्लिश भाषा आती है ना ही उन विषयों का पर्याप्त पूर्ण ज्ञान होता है जो की शिक्षण कार्य में आवश्यक है परंतु यहां पर भी प्राथमिक माध्यमिक स्कूल के निजी शिक्षण संस्थानों में उनके पास पर्याप्त हवादार सुरक्षित कमरे पेय जल, क्रीड़ागंन, पुस्तकालय प्रयोगशाला आदि की व्यवस्था हो ना हो परंतु फीस हजारों में ली जाने के बावजूद भी उचित शिक्षा की व्यवस्था नहीं होती अनावश्यक पुस्तक कॉपियों मन चाहे लिखो की मनचाही दुकान से ही खरीदने के लिए जो 4 से 10 गुना महंगी होती है विद्यार्थियों के माता-पिता को खरीदने के लिए बाध्य किया जाता है। बेशक इन सारे प्राथमिक, माध्यमिक, उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में 90% में शासकीय विधि अनुसार आवश्यक शिक्षण कक्ष शिक्षकों का कक्ष, प्राचार्य का कक्ष, खेल का मैदान, उचित हवलदार सुरक्षित कमरों का भवन हो ना हो सुर सुंदरी और धन ले दे वह राजनीतिक पहुंच लगाकर जिला शिक्षा अधिकारियों सी मनितालेली जाती हैबेशक जिला शिक्षा अधिकारियों द्वारा ऐसे स्कूलों से महिला वसूली करने के साथ-साथ उनके निरीक्षक भी अच्छी खासीमासिक त्रैमासिक अर्धवार्षिक या वार्षिक वसूली करते हैं और विद्यार्थियों के जीवन से खिलवाड़ करते रहते हैं पर किसी भी शासकीय अधिकारी नेता मंत्री को क्योंकि सारी सुख सुविधा मिलती रहती हैंकोई चिंता नहीं होती। इंदौर नगर में ही लगभग ऐसे 2000 से ज्यादा स्कूल चलाई जा रहे हैं जिनसे जिला शिक्षा अधिकारी को मोटी कमाई होती है। बेशक भेड़िया झुंड पार्टी की सरकार भी नहीं चाहती कि बच्चे अच्छे शिक्षित हो और शिक्षित होने के बाद में उनके भ्रष्टाचारों कुकर्मों पर आवाज उठाकर उनका जीना मुश्किल कर दें। इसलिए वे भी ऐसे जालसाज स्कूल संचालकों से महीना खाकर और सुर सुंदरी वाले सेवाएं लेकर आंखें मूदे रहते हैं। इन पर जिलाधीश का नियंत्रण होता है पर जिलाधीश को भीजो दो-तीन साल के लिए किसी जिले में प्रदर्शित किया जाता है और उसे भी मोटी कमाई कर अपने आका मुख्यमंत्री को भेजना होता है इसलिए वह भी शांति के साथ टुकुर-टुकुर करते हुए सारे सभी प्रकार के भ्रष्टाचार होते हुए देखता रह वसूली कर चुप रहता है। नियम कानून यहीं पर समाप्त नहीं होते स्कूल के चारों तरफ पांच सौ मीटर तक सिगरेट पान गुटखा शराब आदि की कोई भी दुकान आदि नहीं होना चाहिए पर इसके विपरीत न केवल इंदौर पूरे प्रदेश वरन पूरे देश में शिक्षण संस्थानों के आसपास ड्रग पेडलर्स का जमावड़ा होता जा रहा है। जो युवा होते छात्र-छात्राओं को अपने ही विद्यालयों में पढ़ने वाले साथियों के माध्यम से पहले मुफ्त

में धीरे-धीरे पैसे में फिर घरों में चोरी करवा कर नशीली दावों का व्यापार कर उन्हें बर्बाद करने में लगे हैं जिसमें स्वयं पूरी की पूरी भाजपा भी लगी हुई है वह चाहती है की विद्यार्थी स्कूलों में ही बर्बाद हो जाए ताकि बड़े होकर वह अपने अधिकारों की मांग ही ना कर सकें। वरुण शासकीय स्तर पर अधिकारियों कर्मचारियों के साथ उनके मंत्री नेताओं द्वारा देश की बर्बादी किस प्रकार व कैसे की जा रही है। यह भी समझ नहीं योग्य न रही और उनकी सत्ता सुरक्षित लूटपाट भ्रष्टाचार करने के बाद में भी चलती रहे। वही हाल शासन द्वारा अनुसूचित जाति जनजाति पिछड़ा वर्ग को दी जा रही छात्रवृतियों का भी हर वर्ष हर जिले में अरबो रुपए का जो खेल होता है उसको यह शिक्षण संस्थान माध्यमिक उच्चतर माध्यमिक, महाविद्यालय विश्वविद्यालय जो निजी क्षेत्र में चलाई जा रहे हैं का पैसा भी फर्जी छात्रों के प्रवेश दिखाकर हजम कर जाते हैं दूसरी तरफ प्राथमिक विद्यालय में जो सर्वोच्च न्यायालय ने शिक्षा का अधिकार के नाम से आदेश दिया था उसमें भी हर वर्ष पूरे प्रदेश में हजारों करोड़ों का खेल होता है उसमें भी गरीब बच्चों के नाम से प्रवेश दिखाकर उनकी राशि भी निजी शिक्षण संस्थान हजम कर जाते हैं।

निरीक्षण संस्थानों में अय्याशी और लूट के साथ छात्रों छात्रों छात्राओं के माता-पिता के साथ किस प्रकार लूट का तांडव किया जाता है यदि अरविंदो के शिक्षण संस्थानों में एक दिन भी विद्यार्थियों के पालक शुल्क जमा करने में चूक जाते हैं तो डेढ़ हजार रुपए की विलंब शुल्क वसूला जाता है वही हाल ईसाई मिशनरियों के स्कूलों शिक्षण संस्थानों, चोइथराम, पटेल, ओरिएंटल, सिंबायोसिस आदि शिक्षण संस्थाओं का भी है। यही कारण है की इंदौर, धार, रतलाम झाबुआ खंडवा खरगोन अलीराजपुर, बुरहानपुर, उज्जैन देवास शाजापुर अगर मंदसौर नीमच में बैठे आदिम जाति अनुसूचित जाति पिछड़ा वर्ग के संयोजक सहायक आयुक्त जो करोड़ों रुपए की छात्रवृत्ति में हर वर्ष पिछले 30 सालों से करोड़ों के जालसाजी से धन बांट रहे हैं हरामखोर दोस्तों की फौज सूचना के अधिकार में जानकारी देने के नाम पर नौटंकी ज्यादा करती है और जब उनकी जिलाधीशों को अपील लगाई जाती है तो वह अपील जिलाधीश सुनने की अपेक्षा वह अपने उप जिलाधीश या सहायक जिलाधीश को सौंप देता है जो मोटी वसूली कर, उसे अपील की सुनवाई की तारीख के बाद सुनवाई का पत्र भेजता है। यह हाल पूरे मध्यप्रदेश के सभी जिलों का होने के साथ पूरे देश के सभी जिलों में केंद्र व राज्य शासन द्वारा दी जा रही विद्यार्थियों को छात्रवृतियां सुविधायें का पैसा हजम कर जिलाधीश भी उसका हिस्सा हजम करता है इसलिए उनकी वह जानना तो जांच होने देता है और ना ही वह शुक्रों की फौज आवेदकों को जानकारी देने देती है। अधिकांश शिक्षण संस्थाओं का महीना जिला शिक्षा अधिकारी कलेक्टर से लेकर संभाग आयुक्त और आयुक्त से बना होने के कारण वह सभी प्रकार की जालसाजियां कर विद्यार्थियों को शिक्षक के नाम केवल अंक सूचियां, प्रमाण पत्र, शुक्रिया बांटने की दुकानें बन गई है। जिसमें एक तरफ विद्यार्थियों का भविष्य चौपट हो रहा है बालकों की जेब में खाली हो रही है तो अय्याश राजनेता, माफिया, अधिकारी एक तरफ शिक्षिकाओं का योग शोषण करते हैं तो दूसरी तरफ छात्राओं का भी यौन शोषण कर ही उनको परीक्षाओं में उत्तीर्ण करने सुविधा देने आदि का कार्य करते हैं जहां तक परीक्षाओं का सवाल है तो आप देख रहे हैं 99% सरकारी शिक्षण संस्थान विद्यालयों महाविद्यालयों विश्वविद्यालयों में भी क्योंकि वे सभी सासाकी ढंग से चलाए जाते हैं वहां भी निजी महाविद्यालयों के जालसाज संचालकों द्वारा विद्यार्थियों को विभिन्न माध्यम से लूटा जाता है तो पंजीयन व नियमितीकरण, जांच व देखरेख करने वाले ऐसे भ्रष्ट जालसाज अधिकारी पंजीयन भी सुर सुंदरी धनराशि का उपभोग करके उनके दुकानदारी चलाने जानबूझकर परीक्षाओं को लंबित करना, अरबी परीक्षा में नंबर देना आदि के नाम पर खुलकर शोषण को बढ़ावा देते हैं और अब तो यहां तक होने लगा की परीक्षाएं हो जाने के बाद में उनके उत्तर पुस्तिकाएं जचने के लिए भी जो आज से 40 साल पहले होता था अब नहीं होता कि वह उत्तर पुस्तिकाएं उसमें से नाम हटाकर और रोल नंबर चिपक कर अन्य किसी विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों को जांचने के लिए भेजी जाती थी। मीना और सालों उत्तर पुस्तिकाएं बिना जाती ही पैसे लेकर पास करने का षड्यंत्र करती हैं। निजी का हाल समझ जा सकता है कि निजी महाविद्यालय में विश्वविद्यालय में क्या लूट और शोषण का तांडव चल रहा है। इस पर स्कूली और उच्च शिक्षा विभाग को उचित नियंत्रण करने के लिए पुरे जम्मू का गठन कर नियमित्त जांचों की व्यवस्था की जानी चाहिए। जो शिक्षण शुल्क से लेकर अन्य सभी प्रकार के शुल्कों की वसूली के साथ छात्रों, छात्रों से गोपनीय सभी प्रकार की शोषण की जानकारियां लेकर उन्हें कार्य करने देने या ना करने देने का कुमार देवी जो साधन रूप से हर निजी और सार्वजनिक विद्यालय महाविद्यालय विश्वविद्यालय में लगाया जाना चाहिए। साथ ही शिकायत के नंबर, शोषण की अवस्था में संपर्क करने वाले अधिकारी का नाम संस्थान के द्वार पर सार्वजनिक रूप से प्रदर्शित किया जाना चाहिए। ताकि सच का पता लगाया जा सके।

**CARTOON OF THE WEEK**

साप्ताहिक समय माया

# पंचमुखी क्यों हुए हनुमान?

## सबके संकटमोचक

लंका में महा बलशाली मेघनाद के साथ बड़ा ही भीषण युद्ध चला. अंततः मेघनाद मारा गया. रावण जो अब तक मद में चूर था राम सेना, खास तौर पर लक्ष्मण का पराक्रम सुनकर थोड़ा तनाव में आया.

रावण को कुछ दुःखी देखकर रावण की मां कैकसी ने उसके पाताल में बसे दो भाइयों अहिरावण और महिरावण की याद दिलाई. रावण को याद आया कि यह दोनों तो उसके बचपन के मित्र रहे हैं.

लंका का राजा बनने के बाद उनकी सुध ही नहीं रही थी. रावण यह भली प्रकार जानता था कि अहिरावण व महिरावण तंत्र-मंत्र के महा ज्ञाता है, जादू टोने के धनी और मां कामाक्षी के परम भक्त हैं.

रावण ने उन्हें बुलावा भेजा और कहा कि वह अपने छल बल, कौशल से श्री राम व लक्ष्मण का वध कर दे. यह बात दूतों के द्वारा विभीषण को पता लग गयी. युद्ध में अहिरावण व महिरावण जैसे परम मायावी के शामिल होने से विभीषण चिंता में पड़ गए.

विभीषण को लगा कि भगवान श्री राम और लक्ष्मण की सुरक्षा व्यवस्था और कड़ी करनी पड़ेगी.

राम-लक्ष्मण की कुटिया लंका में सुवेल पर्वत पर बनी थी. हनुमान जी ने भगवान श्री राम की कुटिया के चारों ओर कड़ी सुरक्षा कर दी.

अहिरावण और महिरावण श्री राम और लक्ष्मण को मारने सुमेल पर्वत पर पहुंचे। किन्तु इतनी कड़ी सुरक्षा में वह कुटिया तक पहुँचने में असफल रहे. ऐसे में उन्होंने एक चाल चली. महिरावण विभीषण का रूप धर के कुटिया में घुस गया.

राम व लक्ष्मण पत्थर की सपाट शिलाओं पर गहरी नींद सो रहे थे. दोनों राक्षसों ने बिना आहट के शिला समेत दोनो भाइयों को उठा लिया और अपने निवास पाताल की और लेकर चल दिए.

विभीषण लगातार सतर्क थे. उन्हें कुछ देर में ही पता चल गया कि कोई अनहोनी घट चुकी है. विभीषण को महिरावण पर शक था, उन्हें राम-लक्ष्मण की जान की चिंता सताने लगी.

विभीषण ने हनुमान जी को महिरावण के बारे में बताते हुए कहा कि वे उसका पीछा करें. लंका में अपने रूप में घूमना राम भक्त हनुमान के लिए ठीक न था सो उन्होंने पक्षी का रूप धारण कर लिया और पक्षी का रूप में ही निकुंभला नगर पहुंच गये.

निकुंभला नगरी में पक्षी रूप धरे हनुमान जी ने कबूतर और कबूतरी को आपस में बतियाते सुना. कबूतर, कबूतरी से कह रहा था कि अब रावण की जीत पक्की है. अहिरावण व महिरावण राम-लक्ष्मण को बलि चढा देंगे. बस सारा युद्ध समाप्त.

कबूतर की बातों से ही बजरंग बली को पता चला कि दोनों राक्षस राम लक्ष्मण को सोते में ही उठाकर कामाक्षी देवी को बलि चढाने पाताल लोक ले गये हैं. हनुमान जी वायु वेग से रसातल की और बढे और तुरंत वहां पहुंचे.

हनुमान जी को रसातल के प्रवेश द्वार पर एक अद्भुत पहरेदार मिला. इसका आधा शरीर वानर का और आधा मछली का था. उसने हनुमान जी को पाताल में प्रवेश से रोक दिया.

द्वारपाल हनुमान जी से बोला कि मुझ को परास्त किए बिना तुम्हारा भीतर जाना असंभव है. दोनों में लड़ाई ठन गयी. हनुमान जी की आशा के विपरीत यह बड़ा ही बलशाली और कुशल योद्धा निकला.

दोनों ही बड़े बलशाली थे. दोनों में बहुत भयंकर युद्ध हुआ परंतु वह बजरंग बली के आगे न टिक सका. आखिर कार हनुमान जी ने उसे हरा तो दिया पर उस द्वारपाल की प्रशंसा करने से नहीं रह सके.

हनुमान जी ने उस वीर से पूछा कि हे वीर तुम अपना परिचय दो. तुम्हारा स्वरूप भी कुछ ऐसा है कि उससे कौतुहल हो रहा है. उस वीर ने उत्तर दिया- मैं हनुमान का पुत्र हूं और एक मछली से पैदा हुआ हूं. मेरा नाम है मकरध्वज.

हनुमान जी ने यह सुना तो आश्चर्य में पड़ गए. वह वीर की बात सुनने लगे. मकरध्वज ने कहा- लंका दहन के बाद हनुमान जी समुद्र में अपनी अग्नि शांत करने पहुंचे. उनके शरीर से पसीने के रूप में तेज गिरा.

उस समय मेरी मां ने आहार के लिए मुख खोला था. वह तेज मेरी माता ने अपने मुख में ले लिया और गर्भवती हो गई. उसी से मेरा जन्म हुआ है. हनुमान जी ने जब यह सुना तो मकरध्वज को बताया कि वह ही हनुमान हैं.

मकरध्वज ने हनुमान जी के चरण स्पर्श किए और हनुमान जी ने भी अपने बेटे को गले लगा लिया और वहां आने का पूरा कारण बताया. उन्होंने अपने पुत्र से कहा कि अपने पिता के स्वामी की रक्षा में सहायता करो.

मकरध्वज ने हनुमान जी को बताया कि कुछ ही देर में राक्षस बलि के लिए आने वाले हैं. बेहतर होगा कि आप रूप बदल कर कामाक्षी कें मंदिर में जा कर बैठ जाएं. उनको सारी पूजा झरोखे से करने को कहें.

हनुमान जी ने पहले तो मधु मक्खी का वेश धरा और मां कामाक्षी के मंदिर में घुस गये. हनुमान जी ने मां कामाक्षी को नमस्कार कर सफलता की कामना की और फिर पूछा- हे मां क्या आप वास्तव में श्री राम जी और लक्ष्मण जी की बलि चाहती हैं?

हनुमान जी के इस प्रश्न पर मां कामाक्षी ने उत्तर दिया कि नहीं. मैं तो दुष्ट अहिरावण व महिरावण की बलि चाहती हूं.यह दोनों मेरे भक्त तो हैं पर अधर्मी और अत्याचारी भी हैं. आप अपने प्रयत्न करो. सफल रहोगे.

मंदिर में पांच दीप जल रहे थे. अलग-अलग दिशाओं और स्थान पर मां ने कहा यह दीप अहिरावण ने मेरी प्रसन्नता के लिए जलाये हैं जिस दिन ये एक साथ बुझा दिए जा सकेंगे, उसका अंत सुनिश्चित हो सकेगा.

इस बीच गाजे-बाजे का शोर सुनाई पड़ने लगा. अहिरावण, महिरावण बलि चढाने के लिए आ रहे थे. हनुमान जी ने अब मां कामाक्षी का रूप धरा. जब अहिरावण और महिरावण मंदिर में प्रवेश करने ही वाले थे कि हनुमान जी का महिला स्वर गूंजा.

हनुमान जी बोले- मैं कामाक्षी देवी हूं और आज मेरी पूजा झरोखे से करो. झरोखे से पूजा आरंभ हुई ढेर सारा चढावा मां कामाक्षी को झरोखे से चढाया जाने लगा. अंत में बंधक बलि के रूप में राम लक्ष्मण को भी उसी से डाला गया. दोनों बंधन में बेहोश थे.

हनुमान जी ने तुरंत उन्हें बंधन मुक्त किया. अब पाताल लोक से निकलने की बारी थी पर उससे पहले मां कामाक्षी के सामने अहिरावण महिरावण की बलि देकर उनकी इच्छा पूरी करना और दोनों राक्षसों को उनके किए की सज़ा देना शेष था.

अब हनुमान जी ने मकरध्वज को कहा कि वह अचेत अवस्था में लेटे हुए भगवान राम और लक्ष्मण का खास ख्याल रखे और उसके साथ मिलकर दोनों राक्षसों के खिलाफ युद्ध छेड़ दिया.

पर यह युद्ध आसान न था. अहिरावण और महिरावण बडी मुश्किल से मरते तो फिर पाँच पाँच के रूप में जिदां हो जाते. इस विकट स्थिति में मकरध्वज ने बताया कि अहिरावण की एक पत्नी नागकन्या है.

अहिरावण उसे बलात हर लाया है. वह उसे पसंद नहीं करती पर मन मार के उसके साथ है, वह अहिरावण के राज जानती होगी. उससे उसकी मौत का उपाय पूछा जाये. आप उसके पास जाएं और सहायता मांगे.

मकरध्वज ने राक्षसों को युद्ध में उलझाये रखा और उधर हनुमान अहिरावण की पत्नी के पास पहुंचे. नागकन्या से उन्होंने कहा कि यदि तुम अहिरावण के मृत्यु का भेद बता दो तो हम उसे मारकर तुम्हें उसके चंगुल से मुक्ति दिला देंगे.

अहिरावण की पत्नी ने कहा- मेरा नाम चित्रसेना है. मैं भगवान विष्णु की भक्त हूं. मेरे रूप पर अहिरावण मर मिटा और मेरा अपहरण कर यहां कैद किये हुए है, पर मैं उसे नहीं चाहती. लेकिन मैं अहिरावण का भेद तभी बताउंगी जब मेरी इच्छा पूरी की जायेगी.

हनुमान जी ने अहिरावण की पत्नी नागकन्या चित्रसेना से पूछा कि आप अहिरावण की मृत्यु का रहस्य बताने के बदले में क्या चाहती हैं ? आप मुझसे अपनी शर्त बताएं, मैं उसे जरूर मानूंगा.

चित्रसेना ने कहा- दुर्भाग्य से अहिरावण जैसा असुर मुझे हर लाया. इससे मेरा जीवन खराब हो गया. मैं अपने दुर्भाग्य को सौभाग्य में बदलना चाहती हूं. आप अगर मेरा विवाह श्री राम से कराने का वचन दें तो मैं अहिरावण के वध का रहस्य बताऊंगी.

हनुमान जी सोच में पड़ गए. भगवान श्री राम तो एक पत्नी निष्ठ हैं. अपनी धर्म पत्नी देवी सीता को मुक्त कराने के लिए असुरों से युद्ध कर रहे हैं. वह किसी और से विवाह की बात तो कभी न स्वीकारेंगे. मैं कैसे वचन दे सकता हूं ?

फिर सोचने लगे कि यदि समय पर उचित निर्णय न लिया तो स्वामी के प्राण ही संकट में हैं. असमंजस की स्थिति में बेचैन हनुमानजी ने ऐसी राह निकाली कि सांप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे.

हनुमान जी बोले- तुम्हारी शर्त स्वीकार है पर हमारी भी एक शर्त है. यह विवाह तभी होगा जब तुम्हारे साथ भगवान राम जिस पलंग पर आसीन होंगे वह सही सलामत रहना चाहिए. यदि वह टूटा तो इसे अपशकुन मांगकर वचन से पीछे हट जाऊंगा.

जब महाकाय अहिरावण के बैठने से पलंग नहीं टूटता तो भला श्रीराम के बैठने से कैसे टूटेगा ! यह सोच कर चित्रसेना तैयार हो गयी. उसने अहिरावण समेत सभी राक्षसों के अंत का सारा भेद बता दिया.

चित्रसेना ने कहा- दोनों राक्षसों के बचपन की बात है. इन दोनों के कुछ शरारती राक्षस मित्रों ने कहीं से एक भ्रामरी को पकड़ लिया. मनोरंजन के लिए वे उसे भ्रामरी को बार-बार काटों से छेड रहे थे.

भ्रामरी साधारण भ्रामरी न थी. वह भी बहुत मायावी थी किंतु किसी कारण वश वह पकड़ में आ गई थी. भ्रामरी की पीड़ा सुनकर अहिरावण और महिरावण को दया आ गई और अपने मित्रों से लड़ कर उसे छुड़ा दिया.

मायावी भ्रामरी का पति भी अपनी पत्नी की पीड़ा सुनकर आया था. अपनी पत्नी की मुक्ति से प्रसन्न होकर उस भौंरे ने वचन दिया था कि तुम्हारे उपकार का बदला हम सभी भ्रमर जाति मिलकर चुकाएंगे.

ये भौंरे अधिकतर उसके शयन कक्ष के पास रहते हैं. ये सब बड़ी भारी संख्या में हैं. दोनों राक्षसों को जब भी मारने का प्रयास हुआ है और ये मरने को हो जाते हैं तब भ्रमर उनके मुख में एक बूंद अमृत का डाल देते हैं.

उस अमृत के कारण ये दोनों राक्षस मरकर भी जिंदा हो जाते हैं. इनके कई-कई रूप उसी अमृत के कारण हैं. इन्हें जितनी बार फिर से जीवन दिया गया उनके उतने नए रूप बन गए हैं. इस लिए आपको पहले इन भंवरों को मारना होगा.

हनुमान जी रहस्य जानकर लौटे. मकरध्वज ने अहिरावण को युद्ध में उलझा रखा था. तो हनुमान जी ने भंवरों का खात्मा शुरू किया. वे आखिर हनुमान जी के सामने कहां तक टिकते.

जब सारे भ्रमर खत्म हो गए और केवल एक बचा तो वह हनुमान जी के चरणों में लोट गया. उसने हनुमान जी से प्राण रक्षा की याचना की. हनुमान जी पसीज गए. उन्होंने उसे क्षमा करते हुए एक काम सौंपा.

हनुमान जी बोले- मैं तुम्हें प्राण दान देता हूं पर इस शर्त पर कि तुम यहां से तुरंत चले जाओगे और अहिरावण की पत्नी के पलंग की पाटी में घुसकर जल्दी से जल्दी उसे पूरी तरह खोखला बना दोगे.

भंवरा तत्काल चित्रसेना के पलंग की पाटी में घुसने के लिए प्रस्थान कर गया. इधर अहिरावण और महिरावण को अपने चमत्कार के लुप्त होने से बहुत अचरज हुआ पर उन्होंने मायावी युद्ध जारी रखा.

भ्रमरों को हनुमान जी ने समाप्त कर दिया फिर भी हनुमान जी और मकरध्वज के हाथों अहिरावण और महिरावण का अंत नहीं हो पा रहा था. यह देखकर हनुमान जी कुछ चिंतित हुए.

फिर उन्हें कामाक्षी देवी का वचन याद आया. देवी ने बताया था कि अहिरावण की सिद्धि है कि जब पांचो दीपकों एक साथ बुझेंगे तभी वे नए-नए रूप धारण करने में असमर्थ होंगे और उनका वध हो सकेगा.

हनुमान जी ने तत्काल पंचमुखी रूप धारण कर लिया. उत्तर दिशा में वराह मुख, दक्षिण दिशा में नरसिंह मुख, पश्चिम में गरुड़ मुख, आकाश की ओर हयग्रीव मुख एवं पूर्व दिशा में हनुमान मुख.

उसके बाद हनुमान जी ने अपने पांचों मुख द्वारा एक साथ पांचों दीपक बुझा दिए. अब उनके बार बार पैदा होने और लंबे समय तक जिंदा रहने की सारी आशंकायें समाप्त हो गयीं थी. हनुमान जी और मकरध्वज के हाथों शीघ्र ही दोनों राक्षस मारे गये.

इसके बाद उन्होंने श्री राम और लक्ष्मण जी की मूर्छा दूर करने के उपाय किए. दोनो भाई चेत में आ गए. चित्रसेना भी वहां आ गई थी. हनुमान जी ने कहा- प्रभो ! अब आप अहिरावण और महिरावण के छल और बंधन से मुक्त हुए.

पर इसके लिए हमें इस नागकन्या की सहायता लेनी पड़ी थी. अहिरावण इसे बल पूर्वक उठा लाया था. वह आपसे विवाह करना चाहती है. कृपया उससे विवाह कर अपने साथ ले चलें. इससे उसे भी मुक्ति मिलेगी.

श्री राम हनुमान जी की बात सुनकर चकराए. इससे पहले कि वह कुछ कह पाते हनुमान जी ने ही कह दिया- भगवन आप तो मुक्तिदाता हैं. अहिरावण को मारने का भेद इसी ने बताया है. इसके बिना हम उसे मारकर आपको बचाने में सफल न हो पाते.

कृपा निधान इसे भी मुक्ति मिलनी चाहिए. परंतु आप चिंता न करें. हम सबका जीवन बचाने वाले के प्रति बस इतना कीजिए कि आप बस इस पलंग पर बैठिए बाकी का काम मैं संपन्न करवाता हूं.

हनुमान जी इतनी तेजी से सारे कार्य करते जा रहे थे कि इससे श्री राम जी और लक्ष्मण जी दोनों चिंता में पड़ गये. वह कोई कदम उठाते कि तब तक हनुमान जी ने भगवान राम की बांह पकड़ ली.

हनुमान जी ने भावा वेश में प्रभु श्री राम की बांह पकड़कर चित्रसेना के उस सजे-धजे विशाल पलंग पर बिठा दिया. श्री राम कुछ समझ पाते कि तभी पलंग की खोखली पाटी चरमरा कर टूट गयी.

पलंग धराशायी हो गया. चित्रसेना भी जमीन पर आ गिरी. हनुमान जी हंस पड़े और फिर चित्रसेना से बोले- अब तुम्हारी शर्त तो पूरी हुई नहीं, इसलिए यह विवाह नहीं हो सकता. तुम मुक्त हो और हम तुम्हें तुम्हारे लोक भेजने का प्रबंध करते हैं.

चित्रसेना समझ गयी कि उसके साथ छल हुआ है. उसने कहा कि उसके साथ छल हुआ है. मर्यादा पुरुषोत्तम के सेवक उनके सामने किसी के साथ छल करें यह तो बहुत अनुचित है. मैं हनुमान को श्राप दूंगी.

चित्रसेना हनुमान जी को श्राप देने ही जा हे रही थी कि श्री राम का सम्मोहन भंग हुआ. वह इस पूरे नाटक को समझ गये. उन्होंने चित्रसेना को समझाया- मैंने एक पत्नी धर्म से बंधे होने का संकल्प लिया है. इस लिए हनुमान जी को यह करना पड़ा. उन्हें क्षमा कर दो.

क्रुद्ध चित्रसेना तो उनसे विवाह की जिद पकड़े बैठी थी. श्री राम ने कहा- मैं जब द्वापर में श्री कृष्ण अवतार लूंगा तब तुम्हें सत्यभामा के रूप में अपनी पटरानी बनाउंगा. इससे वह मान गयी.

हनुमान जी ने चित्रसेना को उसके पिता के पास पहुंचा दिया. चित्रसेना को प्रभु ने अगले जन्म में पत्नी बनाने का वरदान दिया था. भगवान विष्णु की पत्नी बनने की चाह में उसने स्वयं को अग्नि में भस्म कर लिया.

श्री राम और लक्ष्मण, मकरध्वज और हनुमान जी सहित वापस लंका में सुवेल पर्वत पर लौट आये !

*-स्कंद पुराण और आनंद रामायण के सारकांड की कथा से*

## राक्षस मोदी शासन में भारत बीफ निर्यात में पहले नंबर पर

# सनातनियों आका गोरक्षक नहीं भक्षक

**गाय के नाम पर राजनीतिक रोटियां सेंकने वाली सत्तासीन भाजपा यानी मोदी शासन में भारत दुनिया का पांचवे नंबर का मांस निर्यातक देश है, वहीं बीफ निर्यात के मामले में तो हम दुनिया में ब्राजील के साथ पहले स्थान पर हैं, वहीं सबसे ज्यादा बीफ निर्यातक राज्य उत्तर प्रदेश है, जहां के मुखिया योगी आदित्यनाथ गाय के नाम पर किस तरह राजनीति करते हैं यह किसी से छुपा नहीं है...**

आजकल नेताओं का प्रमुख विषय है, मांस खाने के विरुद्ध बोलना। दूसरी तरफ भीड़ की हिंसा में अनेक लोग केवल गाय के मांस के नाम पर मारे जा चुके हैं। सब देखकर सतही तौर पर लगता तो यही है कि केंद्र की यह सरकार मांस के कारोबार के विरुद्ध है।

उत्तर प्रदेश में आदित्यनाथ सरकार के आते ही मांस के अवैध कारोबार को रोकने के नाम पर खूब दादागिरी की गयी, मगर यह सब लोगों का ध्यान भटकाने की महज कोशिश है। तथ्य तो यह है कि भारत दुनिया का पांचवे नंबर का मांस निर्यातक देश है और बीफ निर्यात के मामले में तो हम दुनिया में ब्राजील के साथ पहले स्थान पर हैं।

हमारा देश प्रतिवर्ष 42,50,000 मीट्रिक टन मांस का निर्यात करता है, इस सन्दर्भ में यह दुनिया में पांचवे स्थान पर है। केवल बीफ की बात करें तो यूनाइटेड स्टेट्स डिपार्टमेंट ऑफ़ एग्रीकल्चर की रिपोर्ट के अनुसार हमारा देश प्रतिवर्ष 18,50,000 मीट्रिक टन बीफ का निर्यात करता है और इस सन्दर्भ में हम ब्राजील के साथ पहले स्थान पर हैं। वर्ष 2017 में केवल बीफ का कुल कारोबार 3 अरब डॉलर से अधिक का था।

वर्तमान में केवल चार देश – भारत, ब्राजील, ऑस्ट्रेलिया और अमेरिका - ऐसे हैं जो प्रतिवर्ष दस लाख टन से अधिक बीफ का निर्यात करते हैं। प्रतिवर्ष निर्यात की मात्रा क्रमशः 1850000, 1850000, 1385000 और 1120000 मीट्रिक टन है। वर्ल्ड ट्रेड आर्गेनाईजेशन की फरवरी, 2018 की एक रिपोर्ट के अनुसार भारत ने बीफ निर्यात के क्षेत्र में वर्ष 2006 से 2016 के बीच बहुत तरक्की कर ली है। वर्ष 2006 में बीफ के विश्व व्यापार में भारत का योगदान महज 2 प्रतिशत था, जबकि 2016 में भारत 20 प्रतिशत से अधिक का भागीदार हो गया।

यह तो सभी जानते हैं कि अब सभी विकसित देश अपने यहाँ बिगड़ते पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधनों के दोहन के प्रति सचेत हो रहे है। ऐसे में सबसे अच्छा उपाय है अपने देश में अत्यधिक प्रदूषण या पाने की अत्यधिक खपत वाले उद्योगों को बंद कर देना और विकासशील देशों को ऐसे उद्योग या कारोबार के लिए प्रेरित करना। इसीलिए भारत में इलेक्ट्रोनिक कचरे का, जहाज तोड़ने का या फिर धातुओं को शुद्ध करने का कारोबार पनपता है। मांस का कारोबार भी इसी कड़ी में शामिल है।

वर्तमान में हालत यहां तक पहुंच गयी है कि उद्योगों को सुविधा देने के नाम पर सभी पर्यावरण क़ानून में ऐसे बदलाव कर दिए गए हैं जो केवल उद्योगों को सुविधा देते हैं, पर्यावरण नहीं बचाते।

प्रतिष्ठित जर्नल साइंस के पिछले वर्ष के जुलाई

अंक में प्रकाशित एक रिव्यू लेख के अनुसार विश्व में मांस की बढ़ती मांग के कारण पर्यावरण संकट में है, तापमान वृद्धि के लिए जिम्मेदार कार्बन डाइऑक्साइड गैस का उत्सर्जन बढ़ रहा है और जैव-विविधता कम हो रही है। विश्व की जनसंख्या बढ़ रही है और साथ ही औसत वार्षिक आय भी बढ़ रही है, इस कारण मांस का उपभोग भी बढ़ता जा रहा है। लेख के सह-लेखक यूनिवर्सिटी ऑफ़ ऑक्सफ़ोर्ड के प्रोफेसर टिम के के अनुसार, मांसाहार की वर्तमान दर भी पर्यावरण के लिए घातक है, और भविष्य में इसके गंभीर परिणाम होंगे।

विश्व के सन्दर्भ में मांस की खपत पिछले 50 वर्षों में लगभग दोगुनी हो चुकी है। वर्ष 1961 में प्रति व्यक्ति वार्षिक खपत 23 किलोग्राम थी जो वर्ष 2014 तक 43 किलोग्राम तक पहुँच गई। इसका सीधा सा मतलब यह है कि मांस की खपत इसी दौरान जनसंख्या वृद्धि की तुलना में 4 से 5 गुना तक बढ़ गई। सबसे अधिक वृद्धि मध्यम आय वर्ग वाले देशों जिनमें चीन और पूर्वी एशिया के देश प्रमुख हैं, में दर्ज की गयी है।

दूसरी तरफ कुछ विकसित देश ऐसे भी हैं जहाँ कुछ वर्ष पहले की तुलना में मांस की खपत कम हो रही है। इंग्लैंड में ऐसा ही हो रहा है। वर्ष 2017 के नेशनल फूड सर्वे के अनुसार वहाँ वर्ष 2012 की तुलना में मांस की खपत में 4.2 प्रतिशत की कमी आ चुकी है, जबकि मांस वाले उत्पादों में 7 प्रतिशत की कमी आई है।

मांस के उत्पादन में अनाजों, सब्जियों और फलों की तुलना में पानी की अधिक खपत होती है, कार्बन डाइऑक्साइड का अधिक उत्सर्जन होता है तथा पर्यावरण पर अधिक बोझ पड़ता है। मानव की गतिविधियों के कारण तापमान वृद्धि करने वाली जितनी गैसों का उत्सर्जन होता है, उसमें 15 प्रतिशत से अधिक योगदान मवेशियों का है। विश्व स्तर पर पानी की कुल खपत में से 92 प्रतिशत पानी का उपयोग कृषि में किया जाता है, और इसका एक-तिहाई से अधिक मांस उत्पादन में खप जाता है।

वर्ष 2010 में किये गए एक अध्ययन के अनुसार सब्जियों के उत्पादन में पानी की औसत खपत 322 लीटर प्रति किलोग्राम है, जबकि फलों के लिए यह मात्रा 962 लीटर है। दूसरी तरफ मुर्गी के मांस के लिए 4325 लीटर, सूअर के मांस के लिए 5988 लीटर, बकरे के मांस के लिए 8763 लीटर और गाय के मांस के लिए प्रति किलोग्राम 15415 लीटर पानी की जरूरत होती है।

इतना तो स्पष्ट है कि अधिक पानी की खपत, अधिक जमीन का उपयोग या प्रदूषण फैलाने वाले उद्योगों को अब औद्योगिक देश अपने यहाँ से बाहर करते जा रहे हैं, और निर्यात का लालच देकर भारत जैसे देशों को ऐसे ही उद्योगों के लिए बढ़ावा दे रहे हैं।

हमारे देश में पानी की कमी या फिर प्रदूषण को तो सरकार समस्या मानती ही नहीं, इसीलिए ऐसे उद्योग तेजी से सरकारी संरक्षण में पनप रहे हैं। दूसरी तरफ सरकार की नीति स्पष्ट है, हम अपने देश में मांस का विरोध करेंगे पर पूरी दुनिया को इसे उपलब्ध करायेंगे।

## फायर कार्टून कार्नर

साप्ताहिक समय माया

### पत्रकारिता का अर्थ जन व राष्ट्र कल्याण

# पत्रकारिता डिग्री से नहीं सतत् अध्ययन से...

**वर्तमान पीत पत्रकारिता और सत्ताधीशों की चरणदासी से जीवन यापन का साधन बन गई**

भारत में पत्रकारिता में पत्रकारिता की डिग्रियां पत्रकारों को नपुंसक बना देती हैं। पत्रकारिता किताबी ज्ञान से नहीं। पुस्तकीय ज्ञान के साथ सामायिक, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक परिस्थितियों का अध्ययन विश्लेषण के मंथन से निकले हुए मक्खनी ज्ञान के जन कल्याण में प्रस्तुतीकरण से है। इसके लिए आवश्यक है कि हर विषय का गहराई से अध्ययन करो और सबसे पहले भारतीय दंड संहिता का अध्ययन करो ताकि आपको आसमान की देश काल की वैधानिक सीमाएं मालूम हो और आप अपने कलम के पंखों को खुलकर जनहित के लिए हर अन्याय से लड़ने कलम चलाने की उड़ान भरने के लिए छोड़ दें।

मेरे पास दो कानूनों की डिग्री होने के साथ आयुर्वेद होम्योपैथी में फेल हुआ हूं। 12 साल बैंकिंग इंडस्ट्री में नौकरी की है। हवाई जहाज उड़ाने से लेकर नाव तक चलाई है। आइ सी डब्लु ए, सीए डीसीडब्ल्यू, एमबीए का विद्यार्थी रहा हूं। प्रवेश लिया, पैसे ना होने के कारण छोड़कर आ गया। वही हाल स्टूडेंट पायलट लाइसेंस बन गया था 8 घंटे की उड़ान भरी है। वैमानिकी से संबंधित अनेकों किताबों

का अध्ययन किया है। परंतु अभी तक विद्यार्थी हूं और पत्रकारिता के लिए मृत्यु पर्यंत विद्यार्थी ही रहूंगा।

फिर पत्रकारिता करने के लिए यह मानकर चलिए। हर सुबह जीवन की नई सुबह जीवन की नई पाठशाला जहां हमें पाना ही पाना है। ज्ञान और अनुभव और उस ज्ञान और अनुभव के समंदर में से जनता के वर्तमान व भविष्य के कल्याण के लिए मंथन कर अमृत की बूंदे निकाल बांट जनता के सुखद और समृद्ध भविष्य की स्थापना में झोंकना है।

फिर पत्रकारिता वह विधा हैजहां आप बिना पलक झपक हर पल कुछ बेहतर कुछ नया कुछ अलग कल्याणकारी सोच और लिख सकते हैं। जो आपको आपकी सोच व कलमबद्धता के कारण आपकी धरती की यात्रा को मृत्युंजयी बना देगी। श्रीराम धरती पर आए अच्छे कार्य किये श्रीराम महान, मृत्युंजयी अविस्मरणीय इसलिए हुए क्योंकि वाल्मीकि ने अपनी कलम से उनके जीवन यात्रा को कलमबद कर दिया। अनीता तो अरबों लोग हर साल धरती पर आते हैं। जानवरों की तरहखाते पीते और मुर्दों की तरह यात्रा पूरी करते हैं और चले जाते हैं। पर प्रकृति और नियति ने आपको अगर कलम थमाई है। तो निश्चित ही अच्छे कार्यों से बहुत कुछ अच्छा करने के लिए, जो आपकी यात्रा को निश्चित ही कालजयी बना सकती है। तो बेहतर पत्रकारिता के लिए आवश्यक है निरंतर ज्ञान के समंदर का अध्ययन मनन और मंथन, भारत की पत्रकारिता डिग्रीयां सब बकवास हैं।

# भारत-अमेरिकी यूरोपीय ड्रग ट्रायल के षडयंत्र का अड्डा

**पेज 1 का शेष**

यहां तक कि उस के चक्कर में बिल गेट की माडर्ना से बनाए गए टीक से अमेरिकी मरीन कॉर्प्स के 7000 लोगों की मौत 72 घंटे में हो जाने के कारण 27 जुलाई 2021 को बिल गेट को गिरफ्तार कर 1 अक्टूबर 2021 को गुंआतेनमो जेल में सुबह 5:00 बजे ही फांसी दे दी गई थी। परंतु यह खबरन केवल दुनिया केबड़े मीडिया संस्थानों के साथ गूगल माइक्रोसॉफ्ट फेसबुक फॉक्स सीएनएन बीबीसी व अन्य मीडिया संस्थान ऑन ने अभी तक छुपा कर रखी है ताकि टीके के कारोबार के ऊपर कोई आंच ना आए। क्योंकि विश्व घटक संगठन को फंडिंग करने वाली फाइल जॉनसन एंड जॉनसन मॉडर्न जैसी आने को कंपनियां भविष्य में भी तक के व्यवसाय कोडरा धमका कर फैलाने ठोकने और मोटी कमाई करने के साथ दुनिया की आबादी को कम करने का षड़यंत्र कर रही है। उससे अभी तक बच्चों से बुजुर्गों तक अकाल मौत का शिकार होकर छह करोड़ से ज्यादा लोग उसमें निपटा दिए गए। सिलसिला अभी रुक नहीं, चल रहा है। सन 2008 में भारत के मध्य प्रदेश के इंदौर महानगर के सरकारी अस्पताल एमवायएच मैं ड्रग ट्रायल का कांड पकड़ा गया। जिसमें अनेकों डॉक्टर ने उन चार सालों में हजारों लोगों को ड्रग ट्रायल कर करोड़ों रुपए की कमाई कर बिना बताए लगभग 10000 से ज्यादा दूध मुंहे बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक अकाल मौत के मुंह में भेज दिए। जब कुछ वरिष्ठ अधिकारियों ने मुझे घेरकर उसका विस्तृत अध्ययन कर लेख लिखने के लिए बोला। तो पहले मैं डालने की कोशिश की पर लगातार दबाव बढ़ने के कारण उसे पर ध्यान देना शुरू किया 15 दिन की लंबी गहरी जांच के बाद जो तक सामने आए उसमें 6 अप्रैल 2004 को डॉक्टर अंबु मनी रामदास जो कांग्रेस की सरकार में स्वास्थ्य मंत्री बनाया था उसने ही विश्व घटक संगठन व उसकी धन देने वाली कंपनियों से मोटा पैसा खाकर पूरे भारत में ट्रक ट्रायल के ऊपर से सभी कानूनी प्रतिबंध आज्ञाएं सरकार को जानकारी देने बताने आदि से मुक्त कर दिया। गहराई से जांच करने पर मालूम पड़ा की लगभग 40% सरकारी व निजी अस्पतालों से निकलने वाले बच्चों से बुजुर्गों तक के शव ड्रग ट्रायल थे। शिकार होकर ही निकलते हैं। उनसे मोटा पैसा भी वसूल कर लिया जाता है। जो दवायें लिखी जाती है। वह उनके अस्पतालों में ड्रग ट्रायल के लिए यूरोप और अमेरिका से बड़ी-बड़ी कंपनियों द्वारा करोड़ों के पैकेज सुविधाओं विदेश यात्राओं के साथ भेजी जाती हैं। उसे पर जिस डा आनंद राय ने वे सारे दस्तावेज इकट्ठे किए थे। औरजिन समाचार पत्रों में उसकी सच्चाई प्रकाशित की थी उनको मोटा धन देने के साथ डॉक्टर आनंद राय को जिन डॉक्टरों ने हजारों को अकाल मौत दी थी। मोटा पैसा खर्च कर विभिन्न आरोप में बदनाम कर जेल में सढ़ाया जा रहा है। वर्जिन डॉक्टर ने हजारों लोगों को अकाल मौत दीवे आज भी न केवल श्याम से नौकरी कर रहे हैं बल्कि डायरेक्ट ट्रायल का उनका धंधा भी अबाध्य रूप से जारी है। इसी स्वास्थ्य विभाग के अंतर्गत कार्य करने वाला खाद्य एवं औषधि विभाग में बैठे सभी औषधि निरीक्षक घर भ्रष्टाचार होने के साथ सबसे मोटी कमाई तो करते ही है।

# मित्रों का कर्ज माफ जनता की जेब साफ

**पेज 1 का शेष**

वही हाल चेक बुक लेने और जारी करने पर भी बैंकों ने शुल्क ठोक कर लूटने का षड़यंत्र कर जनता की जेब साफ कर कर मित्रों के माफ किए हुए कर्जों से हुए घाटों की भरपाई की। कोरोना में भी लगभग 5 करोड़ से ज्यादा वह टीका लगाने के कारण भी 6 करोड़ से ज्यादा के साथ नियमित रूप से लोगों की मृत्यु हो रही है उन सब का पैसा भी इन बैंकों ने हजम कर लिया। मोदी मोदी ने वित्त मंत्री सीतारमण के साथ मिलकर अपने मित्रों का कर्ज हजम या माफ करने जालसाजियों व षड्यंत्र छुपाने के लिए सरकारी बैंकों का एक दूसरी बैंकों में संविलियन कर दिया गया ताकि मित्रों का कर्ज की रकम पकड़ में नहीं आए।

और संविलियन के बहाने आसानी से न केवल जनता की जमा व उदासीन खातों का लाखों करोड़ भी हजम कर लिया गया। इसके बारे में वित्त मंत्रालय से लेकर रिजर्व बैंक तक सब चुप हैं और इसके ऊपर इतने वर्षों में बड़े-बड़े समाचार पत्रों और जनता की नजर भी नहीं पड़ी और ना ही किसी की आवाज उठी। यथार्थ में एक तरफ मोदी ने पिछले साढ़े 9 साल में लगभग सरकारी सहकारी बैंकों का गुजरात वी पूरे देश में लगभग 70 लाख करोड रुपए माफ करवा दिया और जनता की जामो के साथ चल रहे खातों से लगभग इतना ही पैसा जनता की जेब से हजम करवा दिया गया। रिजर्व बैंक ने जो 25 लाख करोड रुपए की बात कही है यह बहुत छोटी है पर फिर भी कम से कम गुजराती इस बंदे को जानकारी तो दी मैं जब जानकारी मांगी तो 6 महीने तक लगातार पत्राचार करने के बाद मामलों को उलझाकर ठंडा कर दिया गया।

इन सारे कर्जों के साथ नए स्वीकृत ऋणों में गौतम अडानी वह उसकी दुनिया भर में फैली और मोदी द्वारा दिलवाई गई देश विदेश के व्यवसायों, बंदरगाह हवाई अड्डे रेलवे ऑस्ट्रेलिया की, भारत की कोयले की खदानें, विद्युत कंपनियां, राष्ट्रीय राजमार्ग के ठेकों उसे पर टोल को खरीदने में, तेल बेल सेल गेल बेल कंपनियों को मित्रों अडानी अंबानी बिरला टाटा को मिला व दिया गया।

एक बार दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने दिल्ली की विधानसभा में बताया था। कि उनके कुछ भाजपाई मित्रों ने बताया कि यथार्थ में अडानी और उसकी सारी फर्में देशी विदेशी कंपनियां केवल 10- 20% की दलाली खाती हैं बाकी सारा खेल स्वयं मोदी ही कर रहा है।

**2014 से अब तक 25 लाख करोड़ रुपये के बैंक ऋण माफ?**

एक रिपोर्ट में एक आरटीआई के जवाब में आरबीआई के जवाब का हवाला दिया गया है कि 2014 के बाद से 25 लाख करोड़ रुपये के बैंक ऋण माफ कर दिए गए हैं।

एक बढ़ती हुई सार्वजनिक धारणा है कि राजनीतिक रूप से जुड़े निगम बाद में डिफ़ॉल्ट करने के इरादे से राष्ट्रीयकृत बैंकों से ऋण सुरक्षित करते हैं। एक बढ़ती हुई सार्वजनिक धारणा है कि राजनीतिक रूप से जुड़े निगम बाद में डिफ़ॉल्ट करने के इरादे से राष्ट्रीयकृत बैंकों से ऋण सुरक्षित करते हैं

अपने दो कार्यकालों में, यूपीए सरकार ने 2004 और 2014 के बीच 3.76 लाख करोड़ रुपये के बैंक ऋण माफ कर दिए थे, लेकिन 2014 के बाद से, मोदी सरकार ने 25 लाख करोड़ रुपये माफ कर दिए हैं, बुधवार को फ्री प्रेस जर्नल की एक रिपोर्ट में दावा किया गया। 2014 के बाद से नौ वर्षों से संबंधित यह आंकड़ा, यूपीए के 10 वर्षों के दौरान राइट-ऑफ़ से 810 प्रतिशत अधिक है। यह सरकार द्वारा संसद में घोषित की गई राशि से भी काफी अधिक है।

रिपोर्ट में कहा गया है कि यह खुलासा सूरत स्थित सूचना का अधिकार (आरटीआई) कार्यकर्ता को भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के जवाब का हिस्सा था, जिसमें 25 लाख करोड़ रुपये का आंकड़ा बताया गया था और साथ ही इसका विवरण भी दिया गया था। जवाब में कहा गया है कि 10.41 लाख करोड़ रुपये के ऋण 'सार्वजनिक' बैंकों में माफ कर दिए गए और अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों में अतिरिक्त 14.53 लाख करोड़ रुपये, कुल मिलाकर 24.95 लाख करोड़ रुपये हो गए, जिसका लगभग 10 प्रतिशत ही माफ किया गया। बैंकों द्वारा वसूल किया गया।

आरबीआई के जवाब में यह भी उल्लेख किया गया है कि यूपीए के वर्षों में औसत वार्षिक ऋण राइट-ऑफ़ लगभग 34,192 करोड़ रुपये था, जबकि मोदी वर्षों में औसत वार्षिक राइट-ऑफ़ लगभग 2.72 लाख करोड़ रुपये रहा है।

रिपोर्ट और पिछले नौ वर्षों में 25 लाख करोड़ रुपये के बट्टे खाते में डालने के चौंका देने वाले आंकड़े ने चिंता पैदा कर दी है क्योंकि सरकार का दावा है कि बैंकों ने पिछले पांच वर्षों में 10.57 लाख करोड़ रुपये और 2012-13 से 15.31 लाख करोड़ रुपये बट्टे खाते में डाले हैं।

अगस्त 2022 में, वित्त राज्य मंत्री भागवत के कराड ने राज्यसभा को एक लिखित उत्तर में 2017 से 2022 के बीच पांच वर्षों में 9.91 लाख करोड़ रुपये का आंकड़ा प्रदान किया था।

मंत्री के जवाब में 2018-19 में 2.36 लाख करोड़ रुपये, 2019-20 में 2.34 लाख करोड़ रुपये और 2020-21 में 2.02 लाख करोड़ रुपये के आंकड़ों का उल्लेख है। 2021-22 में राइट ऑफ घटकर 1.57 लाख करोड़ रुपये रह गया, जबकि 2017-18 में यह आंकड़ा 1.61 लाख करोड़ रुपये था।

5 करोड़ रुपये और उससे अधिक के कुल क्रेडिट एक्सपोजर वाले सभी उधारकर्ताओं की क्रेडिट जानकारी आरबीआई को बड़े क्रेडिट पर सूचना के केंद्रीय भंडार (सीआरआईएलसी) डेटाबेस के तहत ऋण देने वाले संस्थानों द्वारा प्रदान की जाती है। जानबूझकर चूक करने वालों के संबंध में सीआरआईएलसी डेटा 2018-19 से बनाए रखा गया है। मंत्री ने राज्यसभा को बताया कि मार्च 2022 के अंत में जानबूझकर कर्ज न चुकाने वालों की कुल संख्या 10,306 थी।

इस साल जुलाई में आरबीआई द्वारा जारी एक सर्कुलर का शीर्षक 'समझौता निपटान और तकनीकी राइट-ऑफ के लिए रूपरेखा' था। समझौता समझौते के तहत, बैंक कटौती के लिए सहमत होता है और ऋण खातों को बंद करते समय देय भुगतान से कम पर समझौता करता है। लेकिन तकनीकी राइट-ऑफ़ लेखांकन उद्देश्यों के लिए पुस्तकों से बट्टे खाते में डाले गए ऋण हैं, हालांकि बैंक ऋण की वसूली का अधिकार रखता है।

सर्कुलर ने भौंहें चढ़ा दीं क्योंकि आरबीआई जानबूझकर चूक करने वालों और धोखाधड़ी के मामले में भी ऋणों के पुनर्गठन की अनुमति दे रहा था। इसने दोषियों को समझौते से लाभ उठाने और 12 महीने की न्यूनतम 'कूलिंग ऑफ अवधि' के बाद अधिक ऋण के लिए बैंक में वापस लौटने की भी अनुमति दी। सितंबर में, आरबीआई ने एक और दिशा निर्देश जारी किया जिसमें कहा गया कि जानबूझकर कर्ज न चुकाने वालों को पांच साल की अवधि के लिए नई इकाइयों के लिए ऋण देने से रोक दिया जाना चाहिए। हितधारकों से प्रतिक्रिया प्राप्त करने के बाद इन प्रतिबंधों को कानून में संहिताबद्ध किया जाएगा।

चुनावी मौसम में राइट-ऑफ एक शक्तिशाली मुद्दा बन सकता है, क्योंकि लोगों में यह धारणा बढ़ती जा रही है कि राजनीतिक रूप से जुड़े निगम बाद में डिफ़ॉल्ट करने के इरादे से राष्ट्रीयकृत बैंकों से ऋण सुरक्षित करते हैं।

ऐसी धारणा का अच्छा कारण है क्योंकि सकल एनपीए में पीएसयू बैंकों का योगदान 75.9 प्रतिशत है, जबकि अग्रिमों का हिस्सा 61.9 प्रतिशत है।

# हिन्दुओं के संरक्षक नहीं भक्षक

## साढ़े 9 साल में स्वविकास देश और जनता का विनाश

चमक धमक और प्रचार तंत्र के बिल्कुल असली 56 इंची... बिल्कुल असली चाणक्य के ब्रेन वाले... बिल्कुल असली 1000 साल बाद आए हिंदू हृदय सम्राट... जिनकी चाल बिल्कुल असली शेर जैसी है... जिनकी डिग्री बिल्कुल असली है... जिन्होंने हट्टे कट्टे होकर भी 40 साल तक भीख मांग कर खाने का सच अमेरिका, फ्रांस, जापान का भ्रमण करते हुए बोला है... जो बचपन में थ्री पीस सूट पहन कर फोटो खिंचाते थे और अंग्रेजों की तरह बो टाई लगाते थे... पांच हट्टे-कट्टे भाई और पिता के होने के बावजूद जिनकी मां सच में घरों में बर्तन मांज कर परिवार का गुजारा करती थी... जिन्होंने नारी को सशक्त करने के लिए अपनी धर्मपत्नी को सच में देश हित में बेसहारा छोड़ दिया... जो प्रचार तंत्र के हिसाब से विश्व के सबसे शक्तिशाली प्रधानमंत्री हैं... चमचों के हिसाब से जो दुनिया के बॉस हैं बॉस... ऐसे हमारे विश्व गुरु जो दिन में सचमुच 25-25 घंटे काम करते हैं... ऐसे बिल्कुल असली महान व्यक्ति के महान अनुयाइयों में से कोई... जिसके पास मोदी जी की तरह बिल्कुल असली डिग्री हो... क्या इस प्रश्न का जवाब दे सकता है?

कि पिछले 9 वर्ष के लंबे कार्यकाल में मोदी जी ने भारत देश के 100 करोड़ हिंदुओं के हित के लिए कौन सा कानून बनाया है... और पिछले 70 सालों में 100 करोड़ हिंदुओं के नुकसान और मुसलमानों के फायदे के लिए बनाए गए किस कानून को हटाया है... सीधे साधे हिंदुओं तुम बेवकूफ बनते रहते हो और तुम्हें खबर भी नहीं होती... तुम्हें आंख मूंद कर व्यक्तियों के पीछे भागने की आदत है... तुम्हें व्यक्तियों को भगवान बनाकर पूजने की आदत है... तुम झूठ फरेब और प्रचार की चमक दमक भरी सपनों की दुनिया का आनंद लेने के आदी हो...

पहले तुम्हें मुट्ठी भर अंग्रेजों ने बेवकूफ बनाया और तुम्हारे जमींदारों द्वारा ही... तुम्हारी फौज तुम्हारी पुलिस द्वारा ही तुम पर राज किया... जब तुम्हें असलियत समझ में आने लगी और तुम्हारा गुस्सा बढ़ने लगा तो उन्होंने अपना एक बहुत ही महत्वाकांक्षी अय्याश और ठरकी आदमी को तुम्हारा महात्मा बनाकर तुम्हारे गुस्से और लड़ाका शक्ति को अहिंसा में बदलवा दिया और तुम पर बहुत प्यार से राज किया और तुम महात्मा महात्मा महात्मा महात्मा महात्मा चिल्लाते हुए दशकों तक बेवकूफ बनते रहे और अंत में अपने पुरखों की सदियों की मेहनत द्वारा बनाई गई अपनी संपत्ति जमीन जायदाद के साथ-साथ अपनी जान माल से भी हाथ धो बैठे और अपनी बहन बेटियों की इज्जत गंवाकर लाखों की संख्या में कटकर आज उसी बिल्कुल असली महात्मा को गाली देते फिरते हो...

उसके बाद तुम अंग्रेजों द्वारा भारतीय राजनीति में इंप्लांटेड नेहरू और उसके खानदान द्वारा बड़े प्यार से बेवकूफ बनाए जाते रहे... लोगों द्वारा असलियत बताने के बावजूद भी तुम नेहरू जी के पीछे चाचा चाचा कहकर दौड़ लगाते रहे और इंदिरा जी को दुर्गा दुर्गा करके पूजते रहे... बॉलीवुड ने भी तुम्हें 70 साल तक बहुत प्यार से बेवकूफ बनाया... और तुम उन पर पैसे लूटा लूटा कर जात-पात के प्रपंचों में फंसते चले गए... उन्होंने तुम्हारे मुंह में उर्दू भर दी और तुम्हारे बच्चों को बाबर अकबर हुमायूं जहांगीर शाहजहां महान पढ़ा दिए... और तुम बेवकूफों की तरह अपने विनाश पर तालियां बजाते हुए आए थे और आज तक बज रहे हो...

जिस आदमी ने जनरल डायर की तरह मुल्ला मुलायम की तरह गुजरात दंगों में 300 से ज्यादा हिंदुओं की हत्या की... जिसने 50,000 से ज्यादा हिंदुओं को गुजरात में जेलों में ठूंस दिया... जिसने कुर्सी पर बैठते ही खुल्लम खुल्ला मुसलमानों के विश्वास को जीतने के लिए काम करने का संदेश हिंदुस्तान और उसकी सरकार को दिया... और पिछले 9 सालों से लगातार उनके लिए काम भी किया... जिसने कुर्सी पर बैठते ही हिंदुओं की रक्षा के लिए कार्य करने वाले नवयुवकों को गली का गुंडा करार दिया और पूरे देश की सरकारों को उनकी फाइलें खोलने का संदेशा दिया... जिसने खुल्लम खुल्ला मुसलमानो के लिए 300 विशेष योजनाएं बना कर दीं और हिंदुओं के लिए एक भी नहीं... जिसने एक-एक लख रुपए की सरकारी मदद दे दे कर फ्री रहना खाना फ्री कोचिंग दे दे कर और इंटरव्यू में 13 से ज्यादा नंबर बड़ा-बड़ा कर मुसलमानों को कांग्रेस के जमाने से 10 गुना ज्यादा आईएएस और आईपीएस बनाकर भोले वाले हिंदुओं पर राज करने की परमानेंट सत्ता सौंप दी... जिसने नूपुर शर्मा सहित हिंदू हित के लिए आवाज उठाने वाली हर शख्सियत को जमकर सबक सिखाया... जिसने पिछले 9 सालों में हिंदुओं को क्या दिया... डिजाइनर ड्रेस में कैमरे और लाइट्स ले जाकर गुफा में ध्यान लगाने के फोटो और वीडियो... त्रिपुंड लगाकर कपड़े पहनकर चश्मा लगाकर गंगा स्नान की नौटंकी... दाढ़ी कपड़े मोर और उज्जैन और काशी के दो कॉरिडोर?

बहुत ही अकलमंद हिंदुओं कटते रहो मरते रहो बंगाल में, दिल्ली में बेंगलुरु में मणिपुर में मेवात में और नारे लगाते रहो मोदी मोदी मोदी मोदी... तालियां बजा बजा कर हिजड़ों की तरह नृत्य करते रहो... बधाई हो तुम्हें 1000 साल बाद हिंदू हृदय सम्राट हुआ है...

# बच्चों की बर्बादी के लिए WHO जिम्मेदार

## एआई से बच्चों का शोषण फिरौती के केस 7200% बढ़े

### 19 सेकंड के वीडियो कॉल में ही बच्चे उत्पीडन का शिकार बन रहे

**पेज 1 का शेष**

इसके पीछे अमेरिकी चांडाल माइक्रोसॉफ्ट गूगल का पूरी दुनिया को गुलाम बनाने जिसमें अब चीन भी शामिल हो चुका है। और अपनी तरह से नचाकर जोतने का षड्यंत्र है। कोरोनाकाल में आनलाइन पढ़ाई के बहाने, गरीबों और मध्यमवर्गीयों को अपने बच्चों के लिए साल बचाने जीवन बनाने पढ़ाई के लिए कर्ज लेकर भी मोबाइल खरीदने पर मजबूर कर दिया गया। जबकि मैं लगातार कह रहा था जिसके वीडियो samaymaya.com और फेसबुक पर लोड हैं कि इससे यह अमेरिकी षड्यंत्रकारी जबकि कोरोना नाम की कोई बीमारी थी ही नहीं यह सारा षड्यंत्र विश्व घातक संगठन को धन देने वाली वॉलमार्ट अमेजॉन के साथ दवा उत्पादक कंपनियां फाइजर मॉडर्ना जॉनसन एंड जॉनसन जो पूर्व से ही काफी कुख्यात रही हैं।

लर्निंग, गेमिंग से लेकर हर तरह का ऑनलाइन एक्सपोजर बच्चों की जिंदगी तबाह कर रहा है। इन प्लेटफॉर्म पर बच्चों की अजनबियों के साथ बातचीत 19 सेकंड के भीतर उन्हें यौन शोषण का पीड़ित बना सकती है। जबकि बच्चों का औसत ग्रूमिंग समय 45 मिनट है। वीप्रोटेक्ट ग्लोबल अलायंस की ग्लोबल थ्रेट असेसमेंट रिपोर्ट में इस खतरे को लेकर आगाह किया है।

इस रिपोर्ट के मुताबिक बच्चों को इंटरनेट इस्तेमाल की भारी कीमत चुकानी पड़ रही है। वैश्विक स्तर पर 2019 से इंटरनेट पर बाल यौन शोषण कंटेंट 87% बढ़ा है। 3.2 करोड़ मामले दर्ज किए गए। यूएस नेशनल सेंटर फॉर मिसिंग एंड एक्सप्लॉइटेड चिल्ड्रन (एनसीएमईसी) ने इन मामलों का विश्लेषण कर नतीजा निकाला कि वित्तीय यौन उत्पीड़न, एआई जनित कंटेंट जैसे दुरुपयोग के नए मामले सामने आ रहे हैं। 2021-22 के बीच बच्चों से फिरौती के मामले 7200% बढ़े हैं। ऐसी घटनाओं में ऑनलाइन अपराधी बच्चों को अपनी अंतरंग तस्वीरें और वीडियो

साझा करने के लिए तैयार करते हैं। तस्वीरों से हेराफेरी करते हैं और फिर उनसे फिरौती मांगना शुरू करते हैं।

रिपोर्ट के मुताबिक 2023 से एआई की मदद से बाल यौन शोषण कंटेंट बनाया जा रहा है। एक्सटेंडेड (एक्सआर) 6 जैसी उभरती टेक्नोलॉजी इस जोखिम को बढ़ा रही है। यहां तक कि छोटे बच्चों के साथ भी यौन दुर्व्यवहार की प्रवृत्ति बढ़ गई है। इंटरनेट वॉच फाउंडेशन ने 2020 से 2022 की पहली छमाही तक 7-10 साल के बच्चों के द्वारा बनाई गईं अंतरंग तस्वीरों के मामलों 360% की वृद्धि दर्ज की है।

रिपोर्ट में कहा गया है कि ऑनलाइन ग्रूमिंग और गेमिंग सबसे बड़ा खतरा है। ऑनलाइन गेमिंग जो वयस्क-बच्चे के बीच मेलजोल, आभासी गिफ्ट के आदान-प्रदान की सुविधा प्रदान करता है, वो इन जोखिमों को काफी बढ़ा देता है। वीप्रोटेक्ट ग्लोबल एलायंस के कार्यकारी निदेशक इयान ड्रेनन कहते हैं कि नई टेक्नोलॉजी क्षमताएं मौजूदा जोखिमों को और बढ़ा रही हैं। ऐसे में दुरुपयोग रोकने के लिए वैश्विक स्तर पर सख्त नियम बनने चाहिए। बच्चों की सुरक्षा पर कोई समझौता नहीं किया जा सकता।

### लड़कियों की तुलना में लड़कों के शिकार होने की आशंका अधिक

लड़कियों की तुलना में लड़कों के वित्तीय यौन उत्पीड़न के शिकार होने की आशंका अधिक है। जबरन वसूली करने वाले लोग सोशल मीडिया के जरिए लड़कियों के रूप में किशोरों से संपर्क करते हैं। कई मामलों में, बच्चों ने सुसाइड तक कर ली।

13 देशों की स्टडी बताती है कि सभी मामलों में से 60% में ऑनलाइन दुर्व्यवहार के मामले में अपराधी का बच्चे के परिचित होने की संभावना होती है।

खुद अपनी जानकारी या अंतरंग चित्र बनाना सेक्सटिंग और इससे संबंधित व्यवहार है। यह ऑनलाइन अजनबियों के साथ दोस्ती, फिर उससे व्यक्तिगत मुलाकात जोखिम को बढ़ा देता है।

इंटरनेट वॉच फाउंडेशन ने 2023 के 5 हफ्ते में एआई-जनित दुरुपयोग वाले यूआरएल की 29 मामले दर्ज किए। इनमें 7 बाल यौन उत्पीड़न से जुड़े थे।

---

### ऑस्ट्रेलिया सख्त नियम बनाने वाला पहला देश, एक्स पर 3.2 करोड़ का जुर्माना लगाया

पिछले महीने, वैश्विक स्तर पर ऑस्ट्रेलिया ने पहली बार इसको लेकर सख्त नियम बनाए हैं। बड़ी टेक कंपनियों को यह सुनिश्चित करना होगा कि एआई का इस्तेमाल बाल यौन शोषण के लिए डीपफेक तस्वीरें और वीडियो बनाने में न हो। ऑस्ट्रेलिया ने एक्स (पूर्व में ट्विटर) पर 3.2 करोड़ का जुर्माना लगाया है।

साप्ताहिक समय माया

## बात बात पर ताने मार थका असक्षम, कमजोर, नकारा सिद्ध कर बुढ़ापे का अहसास कराना

# बुढ़ापे के पीछे पत्नी की अहम भूमिका

### मानसिक रूप से दबाव में रखकर अपने इशारे पर नचाने की आदत

मेरे आयुर्वेद होम्योपैथी के साथ-साथ सामाजिक का समाज पारिवारिक स्थितियों सबके मिले-जुली वास्तविकता का बुढ़ापे के संबंध में सच जो संग्रहित किया वह आपको प्रस्तुत है आप अपनी अपनी राय टिप्पणियां आलोचनाएं करके भविष्य की पीढ़ी को हम सब मिलकर कुछ अच्छा कर व दे सकते हैं व देसकेंगे।

काफी गहन अध्ययन, अनुभव के निष्कर्षों से जो मैंने व्यक्ति के बूढ़ा होने की कहानी और रहस्य जानने का प्रयास किया।

मेरे अध्ययन का अभी तक का सार व्यक्ति के बूढ़ा होने के संबंध में सामने आया। यह सार पुराने इतिहास वर्तमान परिस्थितियों सामाजिक और पारिवारिक स्थितियों के आधार पर मैंने निकाला जिसे आज नहीं तो कल और कल नहीं तो परसों पूरी दुनिया मनोवैज्ञानिक मेडिकल साइंस सब स्वीकार करेंगे।

यथार्थ में आदमी बूढ़ा होता नहीं उसको उसकी बीवी और बच्चों की बढ़ती लंबाई उम्र और उसकी चिंताएं बूढ़ा बना देती हैं। आपकी जीवनसंगिनी से आपके बच्चे पैदा हो गए हैं। तो वह दिन भर में 2-4 बार नसीहत देगी। कैसे रहते हो? कैसे करते हो? बच्चे बड़े हो रहे हैं? उम्र बढ़ रही है। ढंग से रहा करो। शर्म नहीं आती।

बच्चे क्या कहेंगे? जीवन भर पत्नी यही 24 घंटे में दो चार बार अलग अलग अंदाज अलग अलग तरीकों से जो सीख बांटती है।बच्चों की बढ़ती लंबाई उसको पोषित करती है।

जो मनोवैज्ञानिक दबाव के कारण यथार्थ में पुरुष की मानसिकता में उम्र के बढ़ते प्रभाव को थोपने के कारण, पुरुष को बुढ़ापे की तरफ ले जाती है।

जबकि वही जीवनसंगिनी जीवनसाथी एक दूसरों को इन सब से दूर रहकर, उल्टे ही उसको डांट कर न केवल बच्चों की तरह खेलने कूदने को प्रेरित करें व अन्य कार्यों न केवल भोग रोमांस के लिए प्रेरित करें। असक्षमता पर प्यार से जीवनसंगिनी के साथ मां की तरह उसको बच्चों की तरह जोश दे। क्या बुढ़ापा आ गया। उठो यह भी करना है। क्या हुआ दूध के दांत टूटे नहीं और थक गए हो। यह नहीं कर पाऊंगा। वह नहीं खाऊंगा। उस समय मां की तरह उस को डांटे, प्यार से हर बड़े से बड़े कार्य को करने की प्रेरणा दें। अपने पति से जानबूझकर छेड़छाड़ अन्य व अपनी सहेलियों से, स्त्रियों से बातचीत व रोमांस करने की प्रेरणा दें। ठीक है शारीरिक संबंध स्थापित नहीं करना है। बच्चों की तरह खाने-पीने मस्ती करने के लिए प्रेरित करें। तो हर आदमी अपने बुढ़ापे को टाल सकता है। ऐसी 90 साल की उम्र तक वह जो सक्षम रहकर न केवल संभोग कर सकता है। वरन दुनिया के हर सारे काम कर सकता है बड़ी चुस्ती फुर्ती और युवाओं की तरह।

परंतु हिंदुओं या भारत की औरतें उल्टे ही पुरुष को डांट डांट कर 24 घंटे में दो चार बार उसको उसकी उम्र का अहसास दिला कर, बुढ़ा बना देती हैं। जो उनके लिए ही जोभविष्य में घातक होता है।

उसको योग करने, खेलने कूदने दोस्तों के साथ, सहेलियों के साथ, घर के सदस्यों के साथ मस्ती करने की प्रेरणा देकर, बीमार होने, परेशान होने पर जोश व हिम्मत देकर प्रेरित करने और अपने पति को जवान बनाए रखने के लिए यह मानसिकता बनाकर कोशिश नहीं करती। जो पुरुष के बुढ़ापे को दूर रख सके।

पुरुष के शीघ्र बुढ़ापे के पीछे उसकी अपनी पत्नी गहन भूमिका निभाती है। उसको बात बात पर ताने मार थका असक्षम, कमजोर, नकारा सिद्ध करती है।

ताकि वह मानसिक रूप से दबाव में रहकर उसके इशारे पर नाचता रहे। उसकी आड़ में वह अपनी मौज मस्ती से इच्छानुसार जीवन गुजार सकें। यह कड़वा सच है। पर सच तो है।

## एक रुपए किलो का गेंहू, 2 रु. किलो का चावल खा जीवन गुजार रहे 100 करोड़ लोग

# ग्लोबल हंगर इंडेक्स 2022 में भारत 121 देशों में से 107वें 23 में 111वें स्थान पर

- **केंद्र ने आरोप लगाया कि रिपोर्ट भूख का एक 'गलत' माप है जो 'गंभीर पद्धतिगत मुद्दों' से ग्रस्त है।**
- **ग्लोबल हंगर इंडेक्स 2022 में भारत 121 देशों में से 107वें 23 में 111 वें स्थान पर पर है**
- **एक गैर-लाभकारी संगठन मुंबई में एक रेलवे स्टेशन के बाहर जरूरतमंद लोगों को मुफ्त भोजन वितरित कर रहा है।**

शुक्रवार को जारी 2022 ग्लोबल हंगर इंडेक्स में भारत 121 देशों में से 107वें स्थान पर है। पिछले साल भारत 116 देशों में 101वें स्थान पर था।

लगातार दूसरे वर्ष, भारत का प्रदर्शन अपने पड़ोसियों पाकिस्तान (99वें), नेपाल (81वें) और बांग्लादेश (84वें) से भी खराब रहा है। भुखमरी सूचकांक में भारत अफगानिस्तान से केवल दो स्थान ऊपर है जो 109वें स्थान पर है।

सूचकांक दुनिया भर में भूख के स्तर और कुपोषण की गणना करता है। इस वर्ष, रिपोर्ट ने 136 देशों के डेटा तक पहुंच बनाई लेकिन उनमें से 121 का मूल्यांकन किया। सूचकांक पर रिपोर्ट में कहा गया है कि शेष देशों के लिए पर्याप्त डेटा उपलब्ध नहीं था।

ग्लोबल हंगर इंडेक्स स्कोर की गणना चार संकेतकों पर की जाती है - अल्पपोषण, बाल कमज़ोर होना (पांच साल से कम उम्र के उन बच्चों का हिस्सा जिनका वजन उनकी ऊंचाई के अनुरूप कम है), बच्चों का बौनापन (पांच साल से कम उम्र के उन बच्चों का जिनकी लंबाई उनकी उम्र के हिसाब से कम है) और बाल मृत्यु दर (पांच वर्ष से कम उम्र के बच्चों की मृत्यु दर)।

भारत का वैश्विक भूख सूचकांक स्कोर 29.1 है, जो देश को भूख की समस्या की 'गंभीर' श्रेणी में रखता है।

'गंभीर' के अलावा, भूख की अन्य श्रेणियों को 'कम', 'मध्यम', 'खतरनाक' और 'बेहद चिंताजनक' के रूप में वर्गीकृत किया गया है।

रिपोर्ट में कहा गया है, 'भारत की आबादी में कुपोषितों का अनुपात मध्यम स्तर पर माना जाता है, और पांच साल से कम उम्र के बच्चों की मृत्यु दर कम मानी जाती है।' 'हालांकि बच्चों में स्टंटिंग में उल्लेखनीय कमी देखी गई है - 1998-1999 में 54.2% से 2019-2021 में 35.5% तक - इसे अभी भी बहुत अधिक माना जाता है। 19.3% पर - नवीनतम आंकड़ों के अनुसार - जीएचआई में शामिल सभी देशों की तुलना में भारत में बच्चों की कमज़ोरी की दर सबसे अधिक है।''

विश्व स्तर पर, चीन, हंगरी, मोंटेनेग्रो, उज्बेकिस्तान, रूस और सऊदी अरब सहित 17 देशों ने शीर्ष स्थान साझा किया। इस साल किसी भी देश को बेहद चिंताजनक श्रेणी में नहीं रखा गया है.

रिपोर्ट में कहा गया है कि भूख के खिलाफ वैश्विक प्रगति हाल के वर्षों में काफी हद तक स्थिर हो गई है और सहारा के दक्षिण में अफ्रीकी क्षेत्र और दक्षिण एशिया सबसे अधिक भूख स्तर वाले क्षेत्र हैं।

इसमें कहा गया है, 'स्थिति डवैश्विक स्तर पर.मौजूदा वैश्विक संकटों - संघर्ष, जलवायु परिवर्तन और कोविड-19 महामारी के आर्थिक नतीजों - के सामने खराब होने की संभावना है, जो भूख के शक्तिशाली चालक हैं।' 'यूक्रेन में युद्ध ने वैश्विक भोजन, ईंधन और उर्वरक की कीमतों में और वृद्धि की है और 2023 और उसके बाद भोजन की कमी में योगदान करने की क्षमता है।'

### गलत सूचना वैश्विक भूख सूचकांक की पहचान है: केंद्र

केंद्र ने शनिवार को कहा कि ग्लोबल हंगर इंडेक्स भारत की छवि को 'एक ऐसे राष्ट्र के रूप में खराब करने के लगातार प्रयास का एक हिस्सा है जो अपनी आबादी की खाद्य सुरक्षा और पोषण संबंधी आवश्यकताओं को पूरा नहीं करता है'।

यह भी कहा गया कि रिपोर्ट में भारत में भूख को गलत तरीके से मापा गया और इसमें पद्धति संबंधी कमियां थीं।

महिला एवं बाल विकास मंत्रालय ने कहा, 'सूचकांक की गणना के लिए इस्तेमाल किए गए चार संकेतकों में से तीन बच्चों के स्वास्थ्य से संबंधित हैं और पूरी आबादी का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकते।' 'कुपोषित आबादी के अनुपात का चौथा और सबसे महत्वपूर्ण संकेतक अनुमान 3000 के बहुत छोटे नमूना आकार पर आयोजित एक जनमत सर्वेक्षण पर आधारित है।'

सरकार ने यह भी आरोप लगाया कि रिपोर्ट जमीनी हकीकत से अलग है और विशेष रूप से कोविड-19 महामारी के दौरान आबादी के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए किए गए प्रयासों को जानबूझकर नजरअंदाज करती है।

'एक-आयामी दृष्टिकोण लेते हुए, रिपोर्ट भारत के लिए अल्पपोषित आबादी के अनुपात 16.3% के अनुमान के आधार पर भारत की रैंक को कम करती है।' केंद्र ने कहा. 'खाद्य असुरक्षा अनुभव पैमाने के माध्यम से भारत के आकार के एक देश के लिए एक छोटे से नमूने से एकत्र किए गए डेटा का उपयोग भारत के लिए अल्पपोषित मूल्य के अनुपात की गणना करने के लिए किया गया है जो न केवल गलत और अनैतिक है, बल्कि इसमें स्पष्ट पूर्वाग्रह की भी बू आती है।'

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक- अजमेरा एस.पी. कुमार द्वारा अपनी दुनिया प्रिंटर्स, 13 प्रेस कॉम्पलेक्स, ए.बी. रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 299, अम्बेडकर नगर, इंदौर (म.प्र.) से प्रकाशित।
भोपाल प्रतिनिधि- एस.के. भारद्वाज मो. 9074551045, इंदौर कार्यालय- 0731-2530859, मोबा. 9300755803